ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-६ अप्रैल -६,२०१४ पाक्षिक माउण्ट आबू 7.50

परमात्म-अवतरण संदेश जन-जन तक पहुँचायें -दादी

- शहर में निकाली शोभायात्रा
- घर-घर में पहुँचाया परमात्मा का संदेश
- चालीस देशों के प्रतिनिधि रहे उपस्थित

शांतिवन। शांतिवन परिसर में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डायमण्ड हॉल के पास में विशाल मैदान पर करीब 40 देशों से आए हुए आगंतुकों के मध्य परमात्मा शिव का ध्वज फहराया गया।

ध्वजारोहण के अवसर पर संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर सभी को बधाई दी और कहा कि हम सभी को परमात्मा की आशाओं को पूर्ण करने के लिए, परमात्मा का अवतरण इस धरती पर हुआ है यह संदेश सभी को पहुंचाना है। परमात्मा भाग्य विधाता बनकर सब को भाग्य बांट रहा है, इसका लाभ सभी को मिलना चाहिए।

आगे उन्होंने कहा कि परमात्मा ने सभी बच्चों को एक काम दिया है कि व्यर्थ को अपने जीवन से समाप्त करें और सदा विश्वकल्याण की भावनाओं को लेकर सब के प्रति शुभ भावना रखते हुए विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलायें। दादी जी ने सभी देशों के आगंतुकों को खूब-खूब बधाई दी।

संस्था के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर ने भी इस अवसर पर आये हुए सभी भाई-बहनों को खूब खूब बधाइयां देते हुए कहा कि आज के समय चारो ओर अशांति के माहौल के मध्य ये संदेश पहुंचाएं कि शांति के सागर परमात्मा शिव का शांति स्थापनार्थ अवतरण हुआ है।

संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. रमेश शाह ने 78वीं शिव जयन्ती की सभी को बधाई देते हुए कहा कि परमात्मा इस धरा पर आकर हमें श्रेष्ठ कर्तव्य करने का मार्ग बता रहे है और आने वाली नयी स्वर्णिम दुनिया का फाउण्डेशन लगा रहे हैं। इसमें सभी को अपनी विशेषताओं और योग्यताओं के आधार से सहयोग करना है।

इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि वर्तमान समय संसार में दु:ख अपनी चरम सीमाओं पर है, ऐसे में परमात्मा शांति और सुख देने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए हैं। और हम सभी मिलकर ये दृढ़ संकल्प करें कि हम ये संदेश जन-जन तक ज़रूर पहुंचाएंगे।

आबू रोड तथा माउण्ट आबू में शांति यात्राओं का आयोजन कर घर-घर में परमात्म अवतरण के संदेश का पैम्फलेट दिया गया। इस यात्रा में शहर के सभी मनुष्यात्माओं ने भाग लिया। और इसके पूर्व शिवरात्रि के उपलक्ष्य में हर बड़े बड़े स्थानों, पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर, ग्लोबल हॉस्पिटल, पीस पार्क, संगम भवन आदि स्थानों पर शिव ध्वज लहराकर शिवरात्रि का पखवारा मनाया गया। इस कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. करुणा आदि सभी वरिष्ठ भाई-बहनें उपस्थित थे।

महान चरित्र गढ़ने में महिलाओं की भूमिका अहम

रायपुर। महिलाएँ अबला नहीं हैं, अपितु महापुरुषों को जन्म देने वाली हैं। किसी भी समाज और देश का स्वरूप वहां की महिलाओं के व्यवहार से प्रतिबिम्बित होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व के महान चरित्रों चाहे महाराजा शिवाजी हों या लाल बहादुर शास्त्री अथवा महात्मा गांधी हों इन सभी महान चरित्रों को गढ़ने में माताओं की अहम भूमिका थी।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग द्वारा शांति सरोवर में आयोजित 'महिला सशक्तिकरण आध्यात्मिक सम्मेलन' कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री रमन सिंह की धर्मपत्नी वीणा सिंह ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि महिलाएँ एकजुट होकर संगठित रूप से अपनी रक्षा करें, यही एकजुटता हमारी ताकत बन जाएगी। इसका सबसे अच्छा उदाहरण गाँव-गाँव में गठित महिला स्व सहायता समूह है। महिलाएँ समूह में संगठित होकर अपना और घर-परिवार दोनों को संवार रही हैं। शराबबन्दी के क्षेत्र में भी महिलाएँ अच्छा काम कर रही हैं। महापौर श्रीमती किरणमयी नायक ने कहा कि महिलाएँ पुरुष बनने की कोशिश न करें। सिर्फ पहनावे से पुरुष नहीं बना जा सकता। वह महिला होकर भी अच्छा काम कर सकती है। उन्होंने कहा कि नारी पुरुष से किसी भी दृष्टि से कमज़ोर नहीं है। कुशलता, बुद्धिमता, व्यावसायिकता और सहनशीलता के साथ-साथ साहस और शौर्य के क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी महत्ता साबित की है। अब यह ज़रूरी हो गया है कि महिलाओं के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदले। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी वर्मा ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व स्तर पर की जा रही सेवाओं की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के माध्यम से महिलाएँ पूरे विश्व में मानव मात्र के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए कार्य कर रही हैं। छत्तीसगढ़ सेवा प्रभारी ब्रह्माकुमारी कमला ने कहा कि जब महिला आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न थी तब नारी की पूजा होती थी। मनुष्य शक्ति मांगने के लिए दुर्गा या अन्य देवियों के पास जाते हैं, किसी को धन चाहिए तो लक्ष्मी के पास जाते हैं, बुद्धि चाहिए तो सरस्वती की आराधना करते हैं, इस प्रकार नारी की अनेक रूपों में पूजा आराधना करते हैं। किन्तु आज की नारी अध्यात्म से दूर होने के फलस्वरूप पूजनीय नहीं है। भौतिक दृष्टि से नारी ने बहुत तरक्की की है किन्तु आध्यात्मिकता से वह दूर हो गई है। अत: वर्तमान समय महिलाओं के आध्यात्मिक सशक्तिकरण की बहुत आवश्यकता है। राजीव गाँधी शिक्षा मिशन की संचालिका रीना बाबा साहेब कंगाले ने कहा कि महिलाएँ कमजोर नहीं है। आज वह हर क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। राज्य के आर्थिक सशक्तिकरण में महिलाओं का काफी अहम योगदान है। लोक सेवा आयोग की सचिव रीता शाण्डिल्य ने कहा कि जीवन में बाधाएँ आती है, लेकिन उनसे डरने की बजाए उन्हें चुनौतियों के रूप में स्वीकार करना चाहिए। संस्कार से ही संसार बदलता है इसलिए अच्छे संस्कार बनाने के लिए अपने विचारों को श्रेष्ठ बनाना होगा। माता को प्रथम गुरु कहा जाता है क्योंकि बच्चों में अच्छे संस्कार डालना यह माताओं का ही कार्य है। इस अवसर पर बोलते हुए धमतरी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सरिता ने कहा कि समाज को श्रेष्ठ बनाना है तो नारी का आध्यात्मिक सशक्तिकरण ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि अब हमें देह का श्रृंगार करने की बजाए दैवी गुणों से स्वयं का श्रृंगार करना होगा।

रायपुर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए वीणा सिंह, किरणमयी नायक, ब्र.कु.कमला तथा अन्य।

कमलापति की कमला को बचाओ कलंक से....

बाबुल के आंगन में हंसती खिलखिलाती, सबको अपनी ओर बरबस खींचती, वे नन्हे पावों से अनाज के मोती रूपी दानों को बिखेरती, एक ऐसी आहट, जिसका स्पर्श भी स्वर्गिक सुख देता है, आज वह करुण क्रन्दन करते पावों को कोई भी दीदार को राज़ी नहीं। कहां गई वो अस्मिता, खो गई वह पहचान, कोई भी उस अन्तरतम आवाज़ को पहचाने भी तो कैसे, क्योंकि सभी रमे पड़े हैं, उस देह की रक्षा में। उसे बचाने के लिए न जाने कितने उपाय करते, फिर भी उस अस्मिता, उस गरिमा की रक्षा नहीं हो पा रही है।

आप कभी कल्पना करके देखें, कोई ऐसी स्थिति बने, आप बहुत अच्छी खुशहाल ज़िन्दगी को जी रहे हैं तभी अचानक आप उन परिस्थितियों से घिर जाते हैं, जिसमें रक्षा तथा सुरक्षा, समाज तथा सामाजिक बन्धनों का डर, आपकी अपनी गरिमा जब संकट के घेरे में हो! आप उसे सबसे कहते फिरेंगे क्या? आप हो हल्ला मचायेंगे कि आइए देखिए ये क्या हो गया! नहीं, आप उसे पर्दा करेंगे कि किसी को रत्ती भर आहट ना हो, आखिर यह हमारी इज़्ज़त है, आबरु है। इसे हमें बचाना है। वही है सबसे बड़ा आधार हमें समाज में ऊँचा सिर उठा कर जीने का। तो यह बात तो स्वयं सिद्ध हो रहा है कि नारी की अस्मिता हमारे लिए क्या मायने रखती है।

- ब्र. कु. गंगाधर

जीवन के सफ़र की शुरुआत नारी से शुरु होती है और नारी पर अन्त। हर कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से, विशेषत: यह महसूस कभी ना कभी तो करता ही है, उसे यहाँ लाने से लेकर, उसकी जीवन संगिनी बन, साथ निभाने तक, और जब हाथ-पाँव काम ना करें, अन्तिम पड़ाव तक उसकी परछाई, उसका साया हमें कितना सुख देता रहा है! देता है। वह अन्त तक सहन करती, समाती व आपके ऊपर की आँच को अपने ऊपर लेने को आतुर रहती है। जब कोई भी आत्मा नारी बनती है, तो शुरु से ही उसके अन्दर ये गुण जन्मजात आ जाते, कि हमें जीवन में नारीत्व को धारण करना है। ऐसा ही आप भी सोचते होंगे। लेकिन सच्चाई उसके विपरीत है, अनुवांशिक रूप से कोई भी अपने बारे में ऐसा नहीं सोच सकता!

लेकिन हमारे खुद के विचार उस पर प्रभाव ज़रूर डालते हैं कि इसे बचाना है, इस डर को मन पूरी तरह स्वीकार करता जाता। फिर एक भयावह रूप लेकर एक कथानक (रचना के आदि से अन्त का सामूहिक रूप) बन जाता है। फिर इन्हीं बातों को कथाकारों को कथा प्रसंग तथा कथांश में एक दृश्य अभिनित करने का जन्म-जात अधिकार मिल जाता है। नारी ऐसी ही थी, इसे ऐसे ही रखना है। आप ज़रा गौर कीजिए, जिन्हें हम कमलापति की कमला कहते, जो हमेशा कमलासन धारण कर कमलिनी पर विराजित होती है। आज हम उसे कमाई, कमानी, कमअवत तथा एक करनी को भांति देखते हैं। नारी उस करतार की करामात है, जिससे इस सृष्टि को रचा गया। अगर वह एक करवट ले तो वह करामात कर सकती है। वह उस करुणानिधान के करीब रहने वाली कर्णेन्द्रिय व जो ज्ञान रूपी कर्णफूल धारण कर, निरन्तर कर्तव्य की ओर अग्रसर है। नदी की कल-कल के कलरव (मधुर-ध्वनि) की भांति है व नारी जो कलत्र वन कलगी (तोंगी) जैसी रक्षात्मक है, अगर वो हट गयी ना तो कलई खुलने देर नहीं लगेगी।

हमें एक साथ एक ऐसा संकल्प लेना होगा, उस कर को, उस कलई को जिसने आजन्म हमारे आंसू पोंछे, हमें कर्मठ बनाया, कुछ ऐसा करो, जो कल्प में करामात के रूप में जाना जाए, कि रक्षा व अस्मिता के लिए, उसे कलंक रूपी कालिमा ना लगने दें।

दृष्टि अर्थात सृष्टि

यह तुम पर निर्भर है। तुम खड़े हो सकते हो गुलाब की झाड़ी के पास और कांटे गिन सकते हो-कांटे वहां हैं। और अगर तुम कांटों में बहुत उलझ जाओ, हाथ-पैर लहुलुहान हो जाएं, तो तुम फूल को देख ही न पाओगे। फूल सिर्फ एक रंगीन धब्बा मालूम पड़ेगा। शायद उस गुलाबी फूल में भी तुम्हें रक्त का ही दर्शन हो। क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भर गए होंगे, और तुम्हारे मन में एक नाराज़गी होगी कि इतने कांटे बनाने की ज़रूरत क्या थी! और जब इतने कांटे हैं तो तुम कैसे भरोसा करो कि फूल होगा।

फिर दूसरा कोई व्यक्ति है जो फूल को देखता है, फूल को छूता है; नासापुटों को भरता है फूल की गंध से। और फूल में अदृश्य के उसे दर्शन होते हैं, झलक मिलती उसको, जिसको पकड़ पाना मुश्किल है। एक अनूठा सौंदर्य फूल में उतरा है! ऐसे व्यक्ति को यह भरोसा करना मुश्किल होगा कि ऐसी गुलाब की झाड़ी में जहां इतने अनूठे फूल लगते, कांटे हो कैसे सकते हैं! और अगर कांटे होंगे, और अगर कांटे हैं, तो वह सोचेगा कि ज़रूर इस फूल के हित में होंगे। कांटों से भी उसकी दुश्मनी चली जाती है जो फूल को देखने लगता है, जो कांटों को देखने लगता है, फूल से भी उसकी दोस्ती हट जाती है। देखने पर बहुत कुछ निर्भर है। सब कुछ निर्भर है। दृष्टि अर्थात सृष्टि।

विघ्नों को देख घबरायें नहीं विघ्नों पर विजयी बनें

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कोई मेरे से पूछते हैं आपकी मेमोरी ऐसे कैसे बनी? तो मैं कहती हूँ इस मेमोरी में और कोई बात है ही नहीं। 'मैं', 'बाबा' और 'ड्रामा' इसके सिवाय और कोई बात बुद्धि में है ही नहीं। मेमोरी माना मैं मरी (पुरानी पराई बातों से)।

एक है सच्ची दिल से सेवा करना, मेरे बाबा का यज्ञ है, यज्ञ की सेवा का कितना भाग्य है, इस संकल्प के साथ खुशी से सेवा करते हैं। पहले नम्बर में आने वाला दाना जो पुरुषार्थ करेगा सच्ची दिल से करेगा। दूसरी है - मान शान से सेवा करना, अगर मान नहीं मिलता है तो सेवा में रूचि नहीं होती है। तीसरी है - टाइम पास करने के लिए, निमित्त मात्र करता है, अन्दर दिल से नहीं करता है। सच्ची दिल से साहब राज़ी हो तो बहुत खुशी होती है, माला में आयेंगे। कोई मित्र-सम्बन्धी, पुराने सम्बन्धी या यहाँ भी कोई ब्राह्मणों में भी किसी से थोड़ा लगाव हुआ, थोड़ी अटैचमेन्ट हुई, थोड़ा नाम-रूप में फंसा, अलबेला या सुस्त है, थोड़ी ईर्ष्या भी है, ऐसे कोई गलती हुई तो सारी की कमाई चट होने से वो 108 की माला तो क्या 16 हज़ार में भी नहीं आयेगा, एलाऊ नहीं होगा क्योंकि पहले दाना वाला कभी नीचे ऊपर नहीं करेगा, इसलिए संगमयुग का समय ऐसा है जो अपने समय को, संकल्प की वैल्यू देखो। इसमें अलबेलाई, आलस्य नहीं चाहिए।

जब ज्ञान की वैल्यू है तभी महसूस होगा यह ज्ञान खज़ाना है। ज्ञान खज़ाने से शक्ति मिलती है। मुरली की गहराई में जाने से उसकी वैल्यू का पता चलता है। बाबा की मुरली में एक याद की बात होगी तो और कुछ नहीं कहेगा, सब कुछ छोड़, सब कुछ भूल एक बाप को याद करो। याद में कोई बात याद न आवे। चेक करना है, चेंज होना है। भले कैसे भी विघ्न आयें लेकिन उन विघ्नों को देख घबराना नहीं है। ऐसी स्थिति हो, विघ्न चला जावे तो यह अन्दर से तैयारी करते हैं। जब से मैं बाबा के पास आई तो बाबा ने मेरे में उम्मीदें रखी कि बच्ची ज्ञान में ध्यान देगी। शुरु से ही मुरली पर मेरा बहुत ध्यान रहता है, मुरली बहुत प्यारी लगती है। कभी भी भूल से मुरली में मुझे कोई डाउट नहीं उठा है। कईयों को थोड़ा होता है, तो कहते हैं बाबा की यह बात मुझे समझ में नहीं आई। समझ में नहीं आई माना बेसमझ हैं। और बातें समझने के लिए टाइम देते हैं, बाबा की मुरली में इतना टाइम नहीं देंगे, विचार नहीं करेंगे, दोबारा उसे रिवाइज़ नहीं करेंगे, तो वो बात कैसे समझ में आयेगी? वो फिर याद कैसे रहेगी?

संसार में मरना और जीना, यह तो देख रहे हैं होता ही है, अभी जी रहे हैं परन्तु उसमें कर्मों का क्या हिसाब-किताब है? हम जीते हैं तो देखें मेरे कर्म कितने अच्छे हैं! तो मरूँगी भी अच्छा, गैरंटी है। अगर मेरे कर्म ऐसे नहीं है, सबकी दुआयें नहीं है, मैं दु:ख लेती या देती हूँ तो सोचो और प्रैक्टिकली देखो मेरा मरना और जीना कैसा होगा? मेरा मरना कैसा होगा वो अभी के जीने से देख लो अपने को। मैं ऐसे कर्म न करूँ, मेरा ऐसा कर्म न हो जो मेरे जीने में किसी को फायदा न हो। अभी परमात्मा बाप सर्वशक्तिवान मिला है तो जितने श्रेष्ठ कर्म करने चाहें उतना कर सकते हैं क्योंकि परमात्मा के बाद, कर्म बड़े बलवान है परन्तु हमारा कोई भी ऐसा साधारण कर्म न हो। साधारणता भी नुकसानकारक है। साधारण बातें करना, सोचना...क्या माला में आयेगा वो? इम्पॉसिबल है इसलिए साधारणता भी न हो। श्रेष्ठता हो। कभी भी कोई एक बात दस बारी रिपीट की होगी, पत्र में लिखेंगे वही बात...अरे, क्या करते हो? टाइम वेस्ट नहीं करो। वही बात, पुरानी बात, जो बात बीती अपने से हुई या दूसरे से हुई, बीती को चितवो नहीं, ऐसा अपने आपको पक्का करना चाहिए। तो ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चारो ही सब्जेक्ट्स में अच्छी मार्क्स लेनी है।

दादी हृदयमोहिनी अति.मुख्य प्रशासिका

भाग्य और भगवान को कभी नहीं भूलना

ओम् शान्ति शब्द कितना मीठा है। आप सबका भाग्य देख करके हम बहुत खुश हो रहे थे कि देखो, किन आत्माओं का भाग्य है। इतना बड़ा भाग्य जो आपको ही बाबा ने चुना। नशा रहता है ना! आपके साथ कितने रहते होंगे लेकिन उनमें से आपको क्यों ढूँढ़ा! और आपने भी बाबा को ढूँढ़ लिया। तो भाग्य और भगवान, कभी अपने इस भाग्य को भूलना नहीं। चाहे पुराने हो गये हैं, अपनी लाइफ एकदम उसी रीति से चल रही है, जैसे चलती है लेकिन बाबा को दिल में समाया हुआ है। अभी दिल में जब बाबा को समा लिया तो कहाँ जायेगा! जा ही नहीं सकता है। बाबा का प्यार एक एक बच्चे से है। ऐसे नहीं बाबा के लिए तो बहुत हैं ना! नहीं। हम ही हैं बाबा के लिये, इतना नशा है ना। चलो साधारण हैं लेकिन बाबा के लिये एक एक बाबा का बच्चा महान है।

और हमें भी आप सब भाई बहनों का भाग्य देख दिल में यही आ रहा है वाह! आप सबका भाग्य वाह! हमें ही बाबा ने ढूँढ़ा, कितना नशा है! चाहे हम क्या भी कर रहे हैं लेकिन हैं किसके? चलो झाड़ू लगाते हैं, झाड़ू लगाने वाला भी किसका है? भगवान का बच्चा है। साधारण काम करते भी नशा तो रहता है ना! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा भाग्य! तो हमेशा और कुछ भी नहीं याद आवे ना, यह नहीं भूलना वाह बाबा! वाह मेरा भाग्य! अपना भाग्य देखो, बाबा ने कहाँ से आके चुना। देखो, कोई कहाँ रहता था, कोई कहाँ रहता था....लेकिन बाबा ने अपने बच्चों को ढूँढ़ लिया। तो भगवान ने हमको ढूँढ़ा, हमारे पड़ोसियों को नहीं ढूँढ़ा, बाबा को हम ही पसंद आये। तो ज़रूर कोई भाग्य है ना। बहुत बड़ा भाग्य है। और सिखाया क्या! बाबा कहते हैं योग सीख लो, बस। अगर योगी आत्मा है तो सब प्राप्तियाँ हैं क्योंकि पहले है अतीन्द्रिय सुख, बाबा से मिलके क्या मिला? अतीन्द्रिय सुख। और एक जन्म के लिए नहीं, आगे भी मिलेगा, गैरंटी है। तो वाह मेरा भाग्य! यह गीत तो सबके अन्दर चलता ही है ना। परमात्मा ही मेरा हो गया और क्या चाहिए? हम बाबा को कैसे याद करते हैं, मेरा बाबा हरेक यही कहता है। यह नहीं कहता है तेरा बाबा, नहीं मेरा बाबा। तो मेरे के ऊपर कितना नाज़ होता है! और खुशी कितनी होती है, लोग अभी तक ढूँढ़ रहे हैं और हम क्या कहेंगे पा लिया, मिल गया है। है ना इतनी खुशी! कभी नहीं भूलना वाह मेरा भाग्य! वाह भगवान वाह! अभी बाबा मिला, यह तो लक हुआ, यह तो निश्चित हो गया ना, हिल सकता है क्या! नहीं। संकल्प में भी नहीं। चलो कोई भी बात हुई, बात बात से होगी ना, भगवान बाबा क्यों भूले। संगठन है, संगठन में तो बातें होंगी। दो बर्तन भी मिलते हैं तो भी एक दो में लगते हैं। तो इतना बड़ा संगठन है बातें तो होंगी थोड़ी बहुत लेकिन हमारे लिये बातें नहीं। हमारे लिये भाग्य है। अपने भाग्य को सदा याद रखो। वाह मेरा भाग्य! कितने आराम से रह रहे हैं। हमें तो स्थापना का याद आ रहा था, बाबा ने मुख्य क्या सिखाया? योगी बनो। योग के प्रति बाबा खुद भी ड्रिल कराता, भले साकार में नहीं है लेकिन आप योग लगाते हो किससे? बाबा से ना! और बाबा भी रेसपॉन्ड कितना अच्छा देता है। जो चाहे लो, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम जो चाहिए लो, सब दे रहा है क्योंकि बच्चे हैं ना, बच्चे तो मिलकियत के मालिक होते हैं ना। तो खुशी रहती है कि कामकाज करते, काम कर रहे हैं, भण्डारे में रोटी बना रहे हैं, सफाई कर रहे हैं। अरे, यह तो कुछ भी नहीं है, अगर खाली रहेंगे तो बीमार हो जायेंगे इसलिए शरीर को भी कुछ चाहिए। लेकिन हमारा भाग्य जो बाबा को मैं ही पसंद आ गया। मेरे मोहल्ले में कितने होंगे, कुमार कितने होंगे लेकिन बाबा की नज़र मेरे ऊपर ही पड़ी। लक है ना!

बदलता समय और नारी

-ब्र.कु.मोनिका, शांतिवन

इस आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हम आज की पीढ़ी को तो शुभकामनाएं देते ही हैं। लेकिन पिछली पीढ़ी की महिलाओं और उनकी कला व योग्यताओं को भी सलाम करते हैं। आज भी ये 'कल की महिलाएं' उतनी ही सशक्त हैं, मगर आज की नारी के 'एम्पावरमेंट' की परिभाषा के कारण पृष्ठभूमि में चली गई हैं और उन्हें कोई याद करना ज़रूरी नहीं समझता।

आठ मार्च महिलाओं का अपना दिन, दुनिया भर में उनके जश्न का दिन। सन् 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने जब अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष की घोषणा की थी, तब से इस दिन की सुगबुगाहट शुरु हुई थी और आज आलम यह है कि सिर्फ जुलूस, महिला संगठनों, रेडियो, टी.वी. कार्यक्रमों तक ही यह दिन सीमित नहीं रहा है, बल्कि कॉरपोरेट और व्यापारी वर्ग भी इसमें शामिल हो गया है। इस दिन के तहत कोई शोरूम महिला सप्ताह मनाता है तो कोई पूरे माह महिलाओं को सामान की खरीददारी पर छूट देता है। ठीक है कि वे अपना व्यापार बढ़ाने और मुनाफा कमाने के लिए महिला सेगमेंट को संबोधित करते हैं, मगर इससे जागरुकता भी बढ़ती है। इस जागरुकता को हम उद्योग और हर सेक्टर में महिलाओं की उपस्थिति के रूप में देख सकते हैं। चाहे राजनीति हो, बैंक हों, उद्योग हों, चैनल्स हों, रेडियो, फिल्में और विज्ञापन, मॉडलिंग, इंजीनियर, एमबीए, खेल, यहां तक कि पर्वतारोहण और तमाम तरह कि एडवेंचर हों, महिलाओं ने हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इसका कारण यह है कि इन तीस-चालीस सालों में महिलाओं को खूब अवसर मिले हैं। तमाम संगठनों, सरकारों ने तो उनके हित में योजनाएं चलाई ही हैं, कानून और अदालतों ने भी उनका साथ दिया है। अपनी मेहनत से उन्होंने साबित भी किया है कि हम किसी से कम नहीं।

गांव-गांव जगती शिक्षा की अलख ने माता-पिता को भी समझाया है कि बेटी को पढ़ाने और आत्म-निर्भर बनाने का अर्थ है न केवल परिवार, बल्कि समाज को आगे बढ़ाना।

लेकिन बाहरी दुनिया में सफल होती महिलाओं और उनके स्टीरियो टाइप्स ने उन महिलाओं को धकेल कर बाहर कर दिया है, जो पिछली पीढ़ियों में थीं। बेशक वे शिक्षित नहीं थीं, लेकिन अपने अनुभव की शिक्षा में किसी से कम भी नहीं थीं। उनके पास पैसे नहीं थे, मगर बचत की आदत से वे कम पैसों में लंबे-चौड़े परिवार की ज़िम्मेदारी उठा लेती थीं।

इन महिलाओं को किसी ने रोल मॉडल नहीं बनाया, शायद इनमें ऐसा बनने की चाहत भी नहीं थी। इन्हें तो घुट्टी में पिलाया गया था कि अगर तुमने अपने परिवार को ठीक से चला लिया तो समझो इस जगत को जीत लिया।

बेशक वे गणित की बड़ी प्रॉब्लम्स को हल न कर पाती हों, मगर ज़िंदगी के गुणा-भाग को बहुत अच्छी तरह से जानती थीं। स्वेटर की बाजू बनानी है तो कितने फंदे जोड़ने हैं और कितने घटाने हैं, इन्हें पता था। एक सलवार, कुर्ता या पेटीकोट सिलने के लिए कितना गज़ कपड़ा चाहिए यह इन्हें मुंह ज़बानी याद था। मिर्च या आम के अचार में कितनी हल्दी, कितना सौंफ, कितना नमक, तेल चाहिए, होली आने से कितने दिन पहले आलू के चिप्स बनाएं कि होली तक सूख जाएं, गुझिया बनाने के लिए कितना खोया, चीनी, किशमिश, गोला चाहिए, यह इन्हें किसी मास्टर शेफ ने नहीं सिखाया था, बल्कि यह ट्रेनिंग इन्होंने अपनी माओं और इनकी माओं ने अपनी माताओं से ली थी। परंपराएं सिखाने का हिस्सा थीं और घर सबसे बड़ा ट्रेनिंग स्कूल।

जिसे आज स्त्री विमर्श अंतर्राष्ट्रीय बहनापा कहता है, उसे ये स्त्रियां बहुत

ही बेहतर तरीके से जानती, अपनाती थीं। ऊपर जितने काम गिनाए गए हैं, उनके लिए आज की पैसा कमाने वाली स्त्रियां पूरी तरह से बाज़ार पर निर्भर हैं। वे ब्रांड्स के जादू में फंसी हैं।

जिन घरेलू महिलाओं की बात हम कर रहे हैं, उनके भी अपने ब्रांड होते थे, चाहे बहुत लोकल ही सही। जैसे कि फलां की बहू ऐसे गुलाब जामुन बनाती है कि बाज़ार में ढूंढ़े नहीं मिले। कोने वाली ताई की कढ़ी के क्या कहने, बस खाओ और उंगलियां चाटो।

इन महिलाओं की ये खासियत किस्सों, कहानियों या किसी दूसरी दुनिया की नहीं, बल्कि अपने ही दशक की है। बहुत से लोग इन दिनों कहते हैं कि महिलाओं के एम्पावरमेंट में महिलाओं के लिए काम करने वाले स्वयं सहायता समूहों का बहुत बड़ा हाथ है। सेवा का उदाहरण दिया जाता है कि किस तरह उसने महिलाओं को अपने पांव पर खड़ा होना और बचत करना सिखाया, लेकिन यदि अपनी मां, चाची, ताई-बुआ को याद करें तो उनके पास हमारी तरह के पर्स और बैग्स नहीं होते थे। पर्स और कंधे पर लटके बैग्स महिलाओं की आत्म-निर्भरता और क्रय शक्ति के प्रतीक हैं। मगर उन महिलाओं के बक्सों में, भगवान की तस्वीरों के पीछे या सिरहाने तकिए के नीचे, छोटी-छोटी, रंग-बिरंगी पुरानी साड़ी से फाड़े कपड़े से बनाई पोटलियां मिलती थीं। जिनमें इनकी छोटी-छोटी बचत मौजूद रहती थी, जो किसी बुरे वक्त, किसी आपदा के वक्त काम आती थी।

वक्त पर दूसरे की मदद इन्हें विरासत में मिलती थी।

इन्हें स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए किसी रजिस्ट्रेशन की ज़रूरत नहीं होती थी, बल्कि एक के वक्त पर दूसरे की मदद इन्हें विरासत में मिलती थी। त्योहार, शादी, नामकरण, मुंडन कोई भी अवसर हो, अड़ोस-पड़ोस की महिलाएं बिना कहे जुट जाती थीं। किसी के यहां पापड़, बड़ियां, चावल की कुरेरी, कांजी, सब कामों में मिलकर हाथ बंटाती थीं। यहां तक कि शादी या किसी समारोह के अवसर पर ये महिलाएं उस घर की मालकिन को मुक्त करके सारा काम अपने हाथ में ले लेती थीं। पूरी बारात के लिए पूड़ी बनाने का काम ये इतनी सहजता से करती थीं कि शायद आज के केटरर सोच भी नहीं सकते। इसके लिए इन्हें कोई पैसे नहीं मिलते थे, मगर यही सही मायने में पड़ोस-सदारी और बहनापा था।

और तो और, जब न इतने अस्पताल थे, न इतने डॉक्टर, न ही इतनी स्वास्थ्य योजनाएं, तब ये महिलाएं दाई की मदद करने के लिए खुद ब खुद पहुंच जाती थीं। कोई पानी गरम कर रही है तो कोई बच्चे की नाल काटने के लिए चाकू आंच में लाल कर रही है, जिससे कि बाद में जब उसे ठंडा करके नाल काटी जाए तो चाकू में किसी भी प्रकार का संक्रमण न रहे। नाल को सुखाकर सहेज कर रखने का भी रिवाज़ था। बच्चे के बीमार पड़ते ही इस नाल को घिसकर बच्चे को चटा दिया जाता था और बच्चा ठीक हो जाता था।

आज स्टेम सेल थैरेपी के तहत इस नाल के खून को सहेजने के लिए कार्ड ब्लड बैंक्स अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किए जा रहे हैं। कहा जाता है कि इस खून से बच्चे को आजीवन छिहत्तर गंभीर रोगों से बचाया जा सकता है। भारत में भी ये बैंक्स बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। मगर हमारी इन औरतों को यह कैसे पता चला कि नाल में गंभीर रोगों का इलाज मौजूद है, यह शोध का विषय ज़रूर है।

कबाड़ से जुगाड़

चूंकि इनमें से अधिकतर महिलाएंआज के मानकों से पढ़ी-लिखी नहीं थीं, इसलिए इनकी किसी भी विशेषज्ञता को रेखांकित करने योग्य नहीं समझा गया। देखा जाए तो एक तरीके से स्त्री विमर्श और महिलाओं के एम्पावरमेंट का नारा देने वालों ने भी परंपरा से प्राप्त इनके ज्ञान की उपेक्षा ही की। परंपरा से प्राप्त इनके ज्ञान में सिर्फ खाना बनाना, पशुपालन, कृषि, जानवरों की देखभाल, फूल गूंथना, घी-मक्खन निकालना ही नहीं, बल्कि जिस रिसाइक्लिंग को आज बच्चों के कुरीकुलम का हिस्सा बनाया जा रहा है या कबाड़ से जुगाड़ करने की बातें की जा रही हैं, इसे भी ये महिलाएं बेहतरीन ढंग से जानती थीं। कोई चादर फट गया, वह किस काम आएगा, रंग न उड़े हों तो कुर्सी की गद्दियां, तकिए के गिलाफ, रूमाल, पेटीकोट, सलवार कुछ भी बनाया जा सकता है। तौलिया फट गया तो इसका पायदान क्या बुरा है। कोई डिब्बा खाली हुआ तो फेंकना क्यों, कुछ और रखने के काम आ जाएगा। कोई कप या गिलास चटक गया तो फूलदान बन जाएगा। और तो और बची दाल, सब्ज़ियों का इस्तेमाल करके पराठों से लेकर विभिन्न व्यंजन तैयार कर दिए जाते थे। स्वाद का स्वाद और बचत की बचत। हाल ही में चेन्नई में वहां की सामाजिक कार्यकर्ताओं, कलाकारों, डॉक्टरों, नृत्यांगनाओं और बहुत-सी स्त्री प्रोफेशनल्स ने एक मुहिम शुरु की है। वे स्कूलों में जा-जाकर बता रही हैं कि हमारी भारतीय स्त्री अरसे से कितनी शक्तिशाली और मज़बूत रही है। उसने परिवार जैसी संस्था को चलाया है, जिसे चलाना काफी कठिन है। पश्चिमी देश इस मामले में विफल हो चुके हैं, मगर वहां की महिलाओं को ही भारत में आदर्श की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है। इस मुहिम में गोल्डमैन सॉच की रिपोर्ट के आधार पर बताया जा रहा है कि भारतीय महिलाओं की घरेलू बचत के कारण विश्व भर में आई मंदी का यहां कोई खास असर नहीं पड़ा।

वायब्रेशन्स को श्रेष्ठ रखें

नारी के सामने कई प्रकार की परिस्थितियां आती हैं, कुछ बाहरी और कुछ घर की। लेकिन नारी को चाहिए कि वो अपने स्वमान में रहकर अपने व्यवहार से, अपनी चलन से सभी को दैवी स्वरूप की अनुभूति कराए। देह-अभिमान के संस्कार नही होने चाहिए क्योंकि देहाभिमान होने से नारी खुद को उस हिसाब से ही तैयार करती है, फिर वैसा ही प्रभाव हो जाता है। हमें अपने वायब्रेशन्स को अपनी आत्मा तथा शरीर दोनों के प्रति इतने पवित्र बनाने चाहिए कि किसी को भी हमारे प्रति कोई भी ऐसी वासना या गलत सोच उत्पन्न ही न हों। एक होता है मेरा किसी में मोह न हो और दूसरा होता है, इतनी पवित्रता हो कि किसी और का भी मेरे में मोह न हो क्योंकि वो सूक्ष्म में ही सही खींचता तो है ना। ब्रह्माकुमारी मोहिनी वर्तमान समय अमेरीका में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अध्यक्षा है। अमेरीका एवं कैरेबियन देशों की प्रादेशिक संयोजिका हैं तथा यू.एन. में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रतिनिधि भी हैं।
-ब्रह्माकुमारी मोहिनी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, न्यूयॉर्क, अमेरीका

अध्यात्म बल की ज़रूरत

असुरों यानी विकारों का नाश कोई आम महिला नहीं कर सकती। इसके लिए आत्म-बल एवं मनोबल की आवश्यकता है जिनका आधार अध्यात्म बल है। देवियों को शिव की शक्ति कहा जाता है अर्थात् उन्होंने शिव पिता परमात्मा से शक्तियां धारण की थीं। आज पुन: वो समय आ चुका है जब माताओं और बहनों को भौतिकता से खुद को समेटकर और परमात्मा शिव से फिर से बल लेकर खुद को जागृति की ओर ले जाना होगा। इससे आसुरी वृत्तियां उनके सामने आने से घबराएंगी। मॉ वैष्णो के मंदिर में कोई मूर्ति नहीं है, सिर्फ एक पिंडी है। अब वास्तव में उनका शरीर तो था ही और असुर जब उनके पीछे दौड़ा तो शरीर देखकर ही दौड़ा लेकिन माता ने अपनी सकारात्मक ऊर्जा से, शक्तिशाली प्रकम्पन से, आध्यात्मिक बल से इतना अपने आपको ऊँचा उठाया कि असुर को शरीर दिखाई ही नहीं दिया और वह केवल आत्मा-रूप में ही नज़र आईं! यही बात ज्वाला देवी और अन्य देवियों की है। आज भी वे माताएं-बहनें जिनमें चारित्रिक बल है वे ऐसे कर्तब दिखा देती हैं। - ब्र.कु. आशा, निदेशिका, ओ.आर.सी. गुड़गांव।

भीलवाड़ा-राज.। सेवाकेन्द्र से निकाली गई 'शिव की बारात' के दौरान विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी, ब्र.कु.इन्द्रा तथा अन्य।

बुटवल-नेपाल। पूर्व प्रधानमंत्री बाबूराम भटराई के साथ समूह चित्र में ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.नरेन्द्र तथा अन्य।

छपड़ा-बिहार। शिव जयन्ती के उपलक्ष्य पर प्रमंडलीय आयुक्त एस.एम.राजू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीता माता।

दिल्ली-होडल। शिवरात्रि कार्यक्रम पर केक काटते हुए सत्यवान इंदोरा,एस.डी.एम., पंकज गोयल, ब्र.कु.उषा तथा अन्य।

धुरी-पंजाब। महाशिवरात्रि पर परमात्मा की याद में झंडारोहण के बाद लोक सभा सदस्य विजय इंदर सिंगला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मूर्ति, ब्र.कु.बृज तथा अन्य।

दीव। शिव जयन्ती के अवसर पर शिव ध्वज फहराने के बाद प्रतिज्ञा लेते हुए लेखराज भाई,चीफ ऑफिसर डी.एम.सी. एण्ड रूरल, समाजसेविका निर्मलाबेन सोमानी, ब्र.कु.गीता तथा अन्य।

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से संपूर्ण स्वास्थ्य की ओर

ब्र.कु.ललित शांतिवन

आखिर यह रोग क्यों होते हैं?

अनुवांशिक

अनेक रोगों के बारे में कहा जाता हए कि ये माता-पिता की ओर से बच्चे को सौगात में मिले हुए रोग है। हमने देखा है और आपने भी देखा होगा कि माँ-बाप तो क्या पिछली 7 पीढ़ियों में भी किसी को मधुमेह का रोग नहीं था फिर भी बच्चे को मधुमेह का रोग हो गया है। जब मैं उदयपुर में था तो मुझे एक माता ने बताया कि उसकी 12 वर्ष की बेटी पिछले 6 वर्ष से डायबिटीज़ से पीड़ित है और उसे रोज़ गोलियां लेनी पड़ती हैं। मैंने उससे पूछा कि आपको या आपके पति को डायबिटीज़ है तो उसने कहा कि नहीं, हमें कोई रोग नहीं है। प्रत्यक्ष प्रमाण सामने है। ऐसा भी देखा गया है कि माँ-बाप को कोई रोग है पर बच्चे का बचपन से ही खान-पान ठीक रखा जाए तो उसे रोग नहीं होगा और अगर रोग हो भी गया तो बाद में भी प्रकृति की शरण में जाने पर वह रोग-मुक्त हो सकता है। अगर माता या पिता को कोई रोग है और बच्चे ने भी माता-पिता वाला खान-पान चालू रखा तो उसे भी वही रोग होने की 99 प्रतिशत संभावना है। अत: रोगों का कारण माता-पिता नहीं हैं परन्तु अनुवांशिक या पारम्परिक रसोईघर है या भोजन पद्धति है।

एलर्जी

किसी चीज़ को खाने से, किसी विशेष वातावरण में जाने से, कोई कपड़ा पहनने से, धूल-मिट्टी आदि से तथा अन्य अनेक ज्ञात-अज्ञात कारणों से शरीर में अचानक कुछ प्रतिक्रियाएं होती है जैसे फुन्सियां निकलना, खुजली चलना, छींके आना, नाक बहना, सर्दी हो जाना आदि। इस एलर्जी कहते हैं। अब यह कोई रोग का कारण नहीं है परन्तु अंदर में रोग विद्यमान है उसकी निशानी है। इस निशानी को देखकर हमें अंदर के रोग को पहचानकर उसके कारण को ठीक करना चाहिए।

राजपुरा टाउन की ब्र.कु.कैलाश (उम्र 45 वर्ष) 12 वर्षों से भारी सिरदर्द से पीड़ित थीं, हाथ सुन्न हो जाना, सर्वाइकल, रातभर नींद न आना, चिड़चिड़ापन आदि समस्याएं भी थीं। स्वर्णिम आहार के प्रयोग से उपरोक्त सभी रोगों से उन्हें मुक्ति मिली तथा वजन 13 किलो कम हुआ।

तो आइए, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पाएं और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें। स्वर्णिम आहार पद्धति ओम शान्ति मीडिया के सितम्बर-II, 2013 अंक में बताई गई है।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

बोल पर ध्यान देने से पहले विचारों को चेक करें

प्रश्नः- इसमें होता क्या है कि मान लो कि वॉस को या पति को लेते हैं। मैं आपकी हर बात मानती जाती हूँ लेकिन मैं अपनी बात आपके सामने नहीं रख पाती हूँ, क्योंकि मेरी बहुत सारी चीजें हैं जो आपके ऊपर निर्भर हो जाती हैं।

उत्तरः- जब वो निर्भरता खत्म हो जायेगी, तभी हम अपनी बात को अच्छी तरह से कह पायेंगे। तब आप बिना नाराज़ हुए या बिना दु:खी हुए भी अपनी बात को सामने वाले से कह सकते हैं। आज अधिकाश लोगों की समस्या क्या है? अंदर बहुत कुछ भरा हुआ है वह कह नहीं पा रहे हैं और कह नहीं पाने के कारण अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं और हम कहते हैं कि हम खुश क्यों नहीं है? क्योंकि हम अपनी बात को बोल नहीं पा रहे हैं। वास्तव में इससे आपका और उनका संबाद खत्म नहीं हुआ है। अब जैसे ही मैंने कुछ कहा तो आप असहमति तो प्रकट नहीं करेंगे, आप नाराज़ तो नहीं हो जायेंगे, ये भय मुझे अंदर ही अंदर घोटता रहता है तो मैं खुश कैसे रह सकती हूँ। हमें यह रियलाइज़ करना होगा कि ये सारा डिसकम्फर्ट है, ये सारा भय है और ये बाहर की वजह से नहीं बल्कि इसे मैंने स्वयं क्रियेट किया है।

प्रश्नः- अगर हम इसी अस्थिरता में, इसी हर्ट में, गुस्से में, जो भी है उसमें जाकर बात करेंगे तो?

उत्तरः- तब यह काम नहीं करेगा। मान लो मेरी कुछ समस्याएं हैं जिसे मुझे अपने ढंग से कहना है। अगर वो इस भाव से कही जा रही है कि मुझे आपकी शिकायत करनी है, मुझे आपको नीचा दिखाना है, अपने आपको सुपीरियर फील कराना है, मुझे आपकी आलोचना करनी है, तो आप कितनी भी अच्छी तरह से उस बात को रख दो, वो नेगेटिव एनर्जी तो साथ में जाने ही वाली है। अगर हम इन भावनाओं से प्रेरित होकर कोई अच्छी बात भी बोलेंगे तो वो काम नहीं करेगी, क्योंकि एनर्जी सिर्फ शब्दों के माध्यम से नहीं जाती है वह हमारे हाव-भाव से भी जाती है। हम कहते हैं मैंने तो उनको बहुत अच्छी तरह से कहा था पर पता नहीं वे क्यों नाराज़ हो गये, पता नहीं उनको वो बात क्यों खराब लगी। वो जिस दृष्टिकोण से देख रहे हैं वह सही है।

अगर मेरी कही हुई किसी बात से सामने वाले व्यक्ति ने हर्ट फील किया तो मुझे स्वयं को चेक करना है कि मैंने इसे किस भाव से बोला। मैं उनको चेक नहीं कर सकती और न ही उनको बदल सकती हूँ लेकिन मैं स्वयं को तो चेक कर सकती हूँ। जो भी मैं बोलती हूँ या जो भी मैं थॉट क्रियेट करती हूँ तो इसकी एनर्जी सामने वाले के पास पहुंच जाती है। इसमें ये महत्वपूर्ण है कि कौन-सी एनर्जी सबसे पहले पहुंचती है? एक है कि हम थॉट्स क्रियेट कर रहे हैं और एक है कि हम शब्द भेज रहे हैं। हम पहले ही सोच लेते हैं कि पता नहीं कैसे दिख रहे हैं, आज क्या पहना हुआ है। ऊपर से तो बोला हाँ, आज तो आप देखने में अच्छे लग रहे हैं, तो इसका परिणाम क्या है? मैं कहती हूँ कि मैंने तो उनसे बहुत अच्छी तरह से बात की पता नहीं क्यों उनको मेरी बात पसंद नहीं आयी। फिर हम कहते हैं कि मैं आपको समझ ही नहीं पायी। ऐसा इसलिए होता है कि मैं सोचती कुछ और हूँ और बोलती कुछ और हूँ। जैसे कि हमारे बीच कनवर्टर लगा हुआ है। सोचो कुछ, और उसे पॉज़ीटिव में कनवर्ट करो फिर बाहर भेज दो, फिर ये उम्मीद करो कि सामने वाले ने तो सिर्फ यहाँ (बाहर) ग्रहण किया है। परंतु मैंने जो बोला वो तो बहुत अच्छा था, उसको अच्छा ही लगना चाहिए। फिर हम क्वेश्चन मार्क करते हैं और कहते हैं कि वो अच्छे नहीं है। मैंने उनसे अच्छी तरह से बात की फिर भी उनको अच्छा नहीं लगा। **क्रमशः**

ब्र.कु. शिवानी

शेरनी स्वयं अपनी रक्षा करने में सक्षम

वर्तमान को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में जो 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा' अभियान सारे भारतवर्ष में चलाया गया है, उस अभियान के अंतर्गत मेरी स्वयं की ऐसी महसूसता है कि नारी स्व-रक्षित है। नारी को किसी से भी रक्षा की आवश्यकता नहीं है। जैसे शेरनी की रक्षा शेर नहीं करता है, शेरनी स्वयं अपनी रक्षा करने में सक्षम है। परंतु ये तभी संभव है जब नारी अपने अंदर की सोई हुई या मर्ज हुई आध्यात्मिक शक्ति को पहचाने, अपनी थर्ड आई ऑफ विज़डम को खोले, इस शरीर के अंदर जो चैतन्य शक्ति आत्मा है उस आत्मा को यथार्थ रूप में रियलाइज़ करे कि वास्तव में वो आत्म-ज्ञान, शक्ति, प्रेम, आनंद और पवित्रता का स्वरूप है। ये स्मृति ही उसको समर्थ बनाने वाली है और जब ये स्मृति उसके अंदर आती है कि मैं आत्मा हूँ, उसकी आत्मा की ये दृष्टि उसके चारो तरफ पवित्रता का शक्तिशाली कवच बनाती है और पवित्रता की शक्ति के आगे कोई कैसी भी आसुरी वृत्ति वाला व्यक्ति हो उसकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। जिसके उदाहरण स्वरूप भी दिखाते हैं कि रामायण में रावण सीता के पास बार-बार गया है लेकिन रावण में ताकत नहीं थी कि वो सीता की तरफ नज़र उठाकर देखे। - ब्र.कु. शारदा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, अहमदाबाद

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी !

-ब्र.कु.अनुज, दिल्ली

कहा जाता है, ''नार्यस्तु यत्र पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'', अर्थात् नारी की जहां पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है। यह एक आधार है या सिर्फ धार्मिक नारा है, या एक सर्वविदित कथन है। इस भावना को उजागर करने पर प्रकाश डाला जाए तो शायद कितनी पुस्तकें लिखनी पड़ जाएं, फिर भी नारी की महिमा लिखी नहीं जा सकती।

फिर भी उस नारी को जो बच्ची, आर्या, भगिनी, माता और गुरु की भूमिका निभाती आई है, उसे कितनी

''नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'', अर्थात् नारी की जहां पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। यह एक आधार है या सिर्फ धार्मिक नारा है, या एक सर्वविदित कथन है।

समस्याओं का आज समाज में सामना करना पड़ता है तथा उन समस्याओं का आधार तथा समाधान क्या हो सकता है, इन बातों पर एक संक्षिप्त प्रकाश डाला जा सकता है।

पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती

पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती देने के लिए तथा संसार में संतुलन कायम करने के लिए सशक्त महिलाओं की आवश्यकता है। चूंकि दुनिया के लोग सभी मान्यताओं को प्राचीन धार्मिक प्रवृत्तियों के आधार पर ही देखते हैं, तो आइए हम वहीं से शुरु करते हैं।

यदि नारी की गरिमा तथा उसकी सम्पूर्णता को लें तो सबसे पहले हमें नारी तथा पुरुष का सम्पूर्ण अर्धनारीश्वर अथवा चतुर्भुज के रूप में दिखाया गया स्वरूप, जिसमें स्त्री तथा पुरुष के प्रति समान भाव को दर्शाया गया को देखना चाहिए। इस सोच को चुनौती देने के लिए कि स्त्री पुरुष का कंधे से कंधा मिलाकर चलने तथा समानता के अधिकार व किसी भी प्रकार से स्त्री को पुरुष से कम न माना जाय।

अब हम इसके वैज्ञानिक आधार को भी देखते हैं, कि ऐसा क्यों दिखाया है? मान्यता है कि हमारे अन्दर दो मस्तिष्क हैं, एक दायां तथा दूसरा बायां। दायां मस्तिष्क स्त्री लिंग का सूचक है तथा बायां मस्तिष्क पुरुष लिंग का सूचक है। पुरुष मस्तिष्क या बायें भाग को तार्किक, साहसी, निर्णायक माना जाता है वहीं दायें भाग को भावनात्मक व काल्पनिक माना जाता है। दोनों का संतुलन एक सम्पूर्ण मानव को दर्शाता है। अतः यह एक आत्मा को दर्शाया गया।

आज समाज में इसे संतुलित करने हेतु लोगों ने बायें तथा दायें दोनों मस्तिष्क या स्त्री तथा पुरुष की शादी को मान्यता देनी शुरु की। और जब यह बढ़ना शुरु हुआ तो उसको जन्म से ही लड़के या लड़की के अन्दर यह आधुनिक सोच भी डाल दी गई कि तुम पुरुष हो तो तुम्हें कैसा होना चाहिए और तुम स्त्री हो तो तुम्हें कैसा होना चाहिए? आज यही मान्यता समाज में प्रचलित होती जा रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब कोई बच्ची या बहन अपने भाई को थप्पड़ मार दे या डांट लगा दे तो माता-पिता ही उस बहन को उसी झुकाव से कहेंगे कि आप स्त्री हो और स्त्री को भावुक तथा सहनशील होना चाहिए तथा उसे अपने भाई के साथ शालीनता से पेश आना चाहिए और बच्चे को कहेंगे आप पुरूष हो तो आपको साहसी होना चाहिए।

इसी सोच ने आज पुरुष को पुरुषत्व का भान तथा स्त्री को पूर्णतः नारीत्व का भान दिलाया है। इस मानसिकता के कारण आज विकास एकतरफा है।

सभी धर्मशास्त्रों में नारियों के प्रति घृणा की भावना प्रदर्शित की गई है, वहीं पुरुषों के लिए कोई कटाक्ष नहीं है। महर्षियों तथा मनीषियों द्वारा लाक्षणिक अथवा सांकेतिक भाषा में प्रकट किए गए कुछ सूक्ष्म आध्यात्मिक सत्यों को टीकाकारों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है। और प्रायः यह खण्डित सत्य समाज में धार्मिक मनोवृत्ति एवं मान्यताओं का स्वरूप ले लेते हैं।

कुछ उदाहरणों के द्वारा हम आपको स्पष्ट करते है। जैसे आत्मा को सर्वोच्च सत्ता की पत्नी के रूप में माना गया तदनुसार आत्मा को सुहागिन कहा जाता है। इस बात को टीकाकारों ने इस प्रकार से लिया कि जब तक कोई नारी किसी पुरुष से विवाह नहीं कर लेती है तब तक वह सुहागिन नहीं बन सकती है। उन आत्माओं की शास्त्रों में चर्चा की गई है, जिन्होंने स्वयं को पूर्णतः सर्वोच्च सत्ता पर निःस्वार्थ भाव से अर्पित कर दिया, इसी प्रकार एक महिला से आशा की जाती है कि वह खुद को अपने पति के लिए पूर्णतः समर्पित कर दे, उसके किसी भी व्यवहार के प्रति कोई प्रश्न आदि न पूछे।

पुरुष 'चैतन्य' तथा नारियों को 'प्रकृति' माना जाता है।

पुरुष को यह शिक्षा दी जाती है कि उन्हें समाज में प्रभावशाली स्थिति प्राप्त है तथा स्त्रियों को सेविका के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार की दुनिया में स्त्रियों को एन्द्रिक सुखप्राप्ति के साधन के रूप में देखा जाता है। जब सूक्ष्म आध्यात्मिक सच्चाइयों की भौतिकवादी समीक्षा की जाती है तब उनका मूल आध्यात्मिक अर्थ लुप्त हो जाता है।

पूर्णतः इस सत्य पर भी लोग विश्वास करते हैं कि नारी शारीरिक संरचना के आधार पर कमज़ोर तथा पुरुषों की तुलना में हीन हैं, वह एक बोझ हैं तथा पारिवारिक स्रोतों का उपभोग करती हैं। उन्हें उत्पादकर्ता नहीं माना जाता है। महिलाएं घरेलू उत्तरदायित्वों के साथ उन सभी कार्यों को सम्पन्न कर सकती हैं, जो पुरुष करता है।

एक सशक्त महिला होने के लिए कुछ निदानों पर चर्चा की जानी चाहिए। कहा जाता है, मांगने से, शिकायतें करने से किसी ने भी शक्तियाँ प्राप्त नहीं की, सबसे पहले स्वयं को संतुष्ट एवं सशक्त बनाना होगा।

आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनना होगा

महिलाओं को सर्वप्रथम आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनना होगा, इससे उनकी मनोस्थिति अति सुदृढ़ होगी तथा उन्हें अपने पर नाज़ भी होगा। वे पुरुषों की तुलना में शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक रूप से कम नहीं हैं क्योंकि आत्मा ने वैसा शरीर लिया है तथा आत्मा ही शक्तिशाली तथा कमज़ोर बनती है। इससे महिलाओं के अन्दर जागरुकता आयेगी तथा वह अपने अधिकारों की शिक्षा, आंतरिक संवेदना तथा बौद्धिक परखशक्ति तथा अपने पूर्वाभासों को स्पष्ट रीति से समझेंगी।

एक सशक्त महिला, सर्वप्रथम अपने अर्थात् स्वयं को देखेगी, तथा सूक्ष्म स्तरीय वृत्ति से अनेकानेक बदलाव लाने का प्रयत्न कर सकेगी।

कहते है कि वर्ग, जाति की सीमा से परे सभी जगहों पर महिलाओं के खिलाफ, शुरुआत से ही भ्रूणहत्या, शिशु हत्या, अल्प आयु में जबरन विवाह आदि समस्याएँ एक भयावह रूप ले चुकी हैं। साथ ही साथ घरेलू हिंसा जिसमें महिला भ्रूण हत्या, माँ बनने वाली महिलाएँ विभिन्न प्रकारों से शिकार बनती है। परम्परागत पारिवारिक पदानुक्रम में महिलाएँ अपने से छोटी महिलाओं को प्रायः नीची नज़र से देखती है। बहुत सारी महिलाएं इस बात से अनजान रहती हैं कि उनसे कोई भूल हो रही है। एक बहू के मन की असुरक्षा तब बढ़ जाती है जब नई बहू अधिक सुंदर, अधिक कुशल, अधिक बुद्धिमान एवं आत्मविश्वासी होती है। उसकी असुरक्षा उसकी निष्क्रियता में परिवर्तित हो जाती है जिसे भूल से उसकी ईर्ष्या मान कर दंडित किया जाता है। ऐसे अनेक पहलू हैं, जिनसे महिलाओं का उत्पीड़न सामने आता है।

इन उपरोक्त मामलों पर रोकथाम के लिए एक संस्था, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पूर्णतः प्रयासरत है। यहां महिला सशक्तिकरण तथा उन्हें समाज के सभी क्षेत्रों में कदम रखने का एक उचित अवसर प्रदान किया जाता है क्योंकि महिलाओं के उत्थान में परमात्म-शक्ति का साथ होना अति आवश्यक है। उनका आत्मबल, गौरव तथा खोया हुआ सम्मान, परमात्मा पिता ही दिला सकते हैं। जब नारी जगत जननी बन जग का उत्थान करने के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देगी तो स्वर्ग की ओर ले जाने के लिए ही मार्ग प्रशस्त करेगी।

अगर जन्म के समय एक महिला शिशु को प्रसन्नता एवं प्रेम से अपनाया जाता है, तो उसके मौलिक अधिकारों के तहत उसे शिक्षा, खुशी एवं संतुष्टता का स्रोत बनाया जा सकता है। सती अनुसूया,सती सावित्री व गार्गी जैसी विदुषी नारियों की पावन भूमि भारत में माता तथा मातृभूमि को स्वर्ग से भी अधिक सम्मान दिया जाता है। पालना तथा पालने से लेकर, मृत संजीवनी बन अनेकों को जीवदान व उनकी ज्ञानक्षुधा को शांत करने वाली, नारी की आज मनोदशा को देखकर सभी ने जैसे एक चुप्पी साध ली है, न खुद जाग रहे हैं, ना जगा रहे है। उठो जागो उन नारियों के प्रति जिन्होंने सदा आपको जीवन देने का ही कार्य किया है। देखो ज़रा ऊपर की ओर कोई आपको बड़ी चातक नयनों से निहार रहा, कह रहा कब आओगे, बरसाओगे स्वाति-नक्षत्र रूपी सुरक्षा की बूंद।

आत्म-विश्वास बढ़ायें

2000 वर्षों के इतिहास में नारी को कोई महत्वपूर्ण रोल नहीं मिला तो पुरुष की दृष्टि यही रही कि नारी बच्चे पैदा करने वाली मशीन व भोग-विलास का साधन है। चाहे वह कमाती भी हो या पढ़ी-लिखी क्यों न हो। तो नारी का सिर कैसे ऊँचा उठता। यद्यपि बहुत धर्म-स्थापक, सुधारक हुए, तो भी संसार का पतन होता गया। स्वयं नारी भी यही मानकर चलती रही और परिणामस्वरूप उसका आध्यात्मिक बल क्षीण होता गया और वो अत्याचार, बलात्कार और पापाचार को सहन करना अपना धर्म समझती रही। आज आवश्यकता इस बात की है कि नारी को इस दलदल से निकाला जाए। उसे ऐसी विधि बताई जाए कि वो आत्मा में शक्ति कैसे बढ़ाए और दृढ़ता से कैसे आगे बढ़े। उसमें आत्म-विश्वास भरा जाए, कल्याणी और वरदानी बनने का लक्ष्य दिया जाए ताकि वो स्वयं को दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी इत्यादि के वंशज मानकर श्रेष्ठता के मार्ग पर चले। सशक्त बनाने का अध्यात्म ही एकमात्र उपाय है। जो प्राचीन काल में अपनी संस्कृति थी उसमें महिलाओं को देवी माना जाता था। उस पुरातन शक्ति को पुनः लौटाने के लिए आध्यात्मिकता ही एक सशक्त मार्ग है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने यह अभियान 78 वर्षों से छेड़ा हुआ है और उसे तब-तक सम्पन्न नहीं माना जाएगा जब-तक कि नारियां खुद सशक्त होकर समस्त विश्व को सशक्त न कर दें।

- ब्र.कु. चक्रधारी, ब्रह्माकुमारीज़ महिला प्रभाग की अध्यक्षा एवं निदेशिका, रशिया

खुद की खुद पर पाबंदियां

सुनीता विलियम्स जो स्पेस में 322 दिन बिताकर, जो कि एक महिला एस्ट्रोनॉट द्वारा सबसे लंबा समय है, दो वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ चुकी हैं। वे यह भी कहती हैं कि इस प्रोफेशन में भले ही पुरुषों का दबदबा था परन्तु उन्हें कभी एक महिला होने की वजह से कोई अधिक दबाव नहीं महसूस हुआ। वे कहती हैं कि महिलाएं स्वयं ही खुद पर पाबंदियां लगा देती हैं। मिसाल के तौर पर स्पेसशिप को यह नहीं पता कि आप पुरुष हैं या महिला हैं। मेरे आदर्शों में सबसे ऊपर मेरी माँ का नाम और फिर मदर टेरेसा का नाम आता है।

- सुनीता विलियम्स, पूर्व एस्ट्रोनॉट एवं अमरीकी नौसैनिक

नारी तू है भाग्यविधाता

-ब्र.कु.प्रीति

व्यक्ति-निर्माण से लेकर विश्व-निर्माण तक महिलाओं के महत्व और भूमिका को हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं। परिवार, जो कि समाज की सबसे बड़ी ईकाई है, चाहे संयुक्त हो या एकाकी, उसकी जीवन पद्धति तथा सामाजिक व्यवहार उस परिवार की प्रमुख महिला के संस्कारों से प्रतिबिम्बित होते हैं। परिवार के हर सदस्य के संस्कारों को परिष्कृत करने की प्रत्यक्ष या परोक्ष ज़िम्मेवारी उसी पर होती है। इतिहास साक्षी है कि विश्व के महान्-से-महान् चरित्रों चाहे महाराजा शिवाजी हों या लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गांधी हों या लाला लाजपत राय, इन सभी को गढ़ने में माताओं (महिलाओं) का ही सबसे बड़ा हाथ रहा है। नारी सेवा,ममता, कल्याण, त्याग और उच्च मूल्यों की सजीव प्रतिमा है। वर्तमान दौर में उसके जीवन को यदि ध्यान साधना और अभ्यास का सम्बल देकर विकसित और परिष्कृत कर दिया जाए तो उसके स्नेह, संग में विनयशील, निःस्वार्थी, कर्तव्यनिष्ठ और विशाल दृष्टिकोण वाले उदारमना व्यक्ति निर्मित हो सकते हैं। आज इसी की आवश्यकता है। इसके लिए नारी का आध्यात्मिक और नैतिक सशक्तिकरण चाहिए। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सशक्तिकरण तो नैतिक सशक्तिकरण की परछाई मात्र हैं।

सदियों से शोषित नारी के लिए सशक्तिकरण एक प्रकार से घाव पर लगाई जाने वाली मलहम है परन्तु मलहम तभी काम करती है जब पहले घाव को पोंछ दिया जाए। नारी के प्रति 'अबला','भोग्या', और 'दूसरे दर्जे की' इस प्रकार का दृष्टिकोण और धर्मशास्त्रों में उसको अपमानित करने वाले, निन्दा सूचक तथा अन्यायकारी शब्द और वाक्य उदाहरण के लिए उसे नरक का द्वार कहना उसके साथ घोर अन्याय ही तो है जबकि नर-नारी दोनों मिल कर ही नरक का द्वार बनते हैं। पुरानी मान्यताओं के साथ-साथ वर्तमान काल की भौतिकवादी आँख ने भी नारी के ईश्वरीय गुणों को पहचानने के बजाए उसे विज्ञापन का साधन तथा उसकी शारीरिक सुन्दरता को निम्न स्तर की कमाई का साधन बना दिया है। उसका स्थान-स्थान पर शारीरिक शोषण होता है और वह स्वयं भी अपनी अस्मिता को भूल, पुरुष के कामी हथकण्डों का शिकार होकर वासना की वस्तु बन गई है। पुनश्च, बहुत दिनों से दबी हुई नारी-वृत्ति स्वतन्त्रता के परिणामस्वरूप, स्वच्छ समाज के स्थान पर एक स्वच्छन्द समाज का वातावरण बनने लगा है। सरकारी कानूनों ने भी वासनात्मक भाव-भंगिमाओं को, कला के नाम पर स्वीकृति देकर आग में घी का काम किया जैसे फ्रायड ने कहा कि - मनुष्य हर कार्य काम-प्रेरित होकर करता है - इससे नारी देह के प्रति पूज्या के स्थान पर भोग्या का गलत दृष्टिकोण समग्र रूप से पनपने लगा है। कई मनोवैज्ञानिकों, लेखकों, चिन्तकों ने पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर नारी को शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक स्तरों पर पुरुष की भेंट में निम्न स्तर की भ्रान्त-धारणाओं के रूप में प्रचलित किया जिसके कारण समाज ने सचमुच ही उसे निम्न दर्जे की और दूसरे दर्जे की घोषित कर दिया। जब तक मान्यताएँ नहीं बदलती तब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता और जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता तब तक सशक्तिकरण हो नहीं सकता।

हमें यह बताते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि महिला सशक्तिकरण का कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पिछले 78 वर्षों से बड़े प्रभावी ढंग से कर रहा है। इस संस्थान का मानना है कि नर और नारी, गृहस्थ रूपी रथ के दो पहिये हैं, अत: यदि दोनों ही दिव्यता और योग के मार्ग को अपनाएँ तो अति उत्तम होगा। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी तो हों, पर उनमें खींचतान न हो। पारस्परिक अगाध आत्मिक स्नेह और सम्मान भवना तो हो पर आसुरी वृत्तियों का, शोषण का और एक दूसरे के प्रति वासना का स्थान न हो। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा इस विद्यालय द्वारा किया जाने वाला नारी और नर की बराबरी का यह कार्य देखने योग्य है। इसका उद्देश्य, ठीक सामाजिक मूल्यों की स्थापना करना है, जिससे नारी श्री लक्ष्मी के समान और नर श्री नारायण के समान स्तर को प्राप्त करें।

नारी अबला है या सबला?

बहुत पुराने ज़माने से पुरुष यह कहता चला आ रहा है कि नारी शारीरिक तौर पर 'दुर्बल' अथवा 'अबला' होती है। यह भी कहा जाता रहा है कि 'नारी की बुद्धि उसके बायें पांव की एड़ी में होती है' अर्थात् उसमें सोचने समझने और निर्णय करने की शक्ति नहीं होती। अब तक शिक्षित लोगों में भी यह विश्वास चला आ रहा है कि बौद्धिक विकास के दृष्टिकोण से भी नारी पुरुष के समतल पर नहीं उतरती। नारी के विरुद्ध यह भी एक आरोप लगाया जाता है कि वह पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक तथा वासना प्रधान होती है। परन्तु आधुनिक शरीर-विज्ञान और मनोविज्ञान द्वारा तथा प्रत्यक्ष उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि नारी के विषय में हज़ारों वर्षों से चली आ रही उपरोक्त चारों प्रकार की (शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक तथा चारित्रिक) मान्यताएँ निराधार हैं और सरासर गलत हैं।

प्रत्यक्ष उदाहरण

वैज्ञानिकों में नोबल पुरस्कार विजेता मैडम क्यूरी को स्थान प्राप्त है। वह भी किसी प्रकार से पुरुषों के काम से कम महत्व का नहीं है। उन्होंने रेडियम को पहली बार उपलब्ध किया था। यूरेनियम-238 का पहले जिस महिला ने अत्यन्त महत्वपूर्ण अविष्कार किया - श्रीमती लाइज मटनर उनका भी विज्ञान में बहुत उच्च स्थान है। इनके अतिरिक्त आइरीन क्यूरी का तथा शरीर-विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र में नोबल पुरस्कार विजेता गर्टी कोरी का स्थान भी सर्वोच्च कोटि के वैज्ञानिकों में गिना जाता है। जहाँ तक साहित्यकारों की बात है, पर्ल बक, गेबरियला मिस्ट्राल, ग्रेजिया डेलेड्डा, सिग्रड, सेल्मा इत्यादि महिलाओं ने भी साहित्य में नोबल पुरस्कार पाया है। कलाकारों में ज्योर्जिया ओ' कीफ भी महान कलाकार मानी गई हैं। संगीतकारों में मइरा हेस्स, और वान्दा लेन्डोवस्का की संगीत कला किसी से कम नहीं है। भारत में भी लता मंगेशकर, एम. सुब्बुलक्ष्मी इत्यादि उच्च कोटि की गायिका तथा नर्तकी मानी गई हैं। दर्शन एवं अध्यात्म के क्षेत्र में जहाँ 'आदि शंकराचार्य' का नाम आता है वहाँ उससे शास्त्रार्थ करने वाली, मण्डल मिश्र की धर्म-पत्नी भारती का नाम भी नहीं भुलाया जा सकता, न ही संत कवियों में सूरदास के महत्व के सामने मीरा के महत्व को विस्मृत किया जा सकता है। शासन-कार्य में भी इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम तथा एलिज़ाबेथ द्वितीय बहुत ही जन-प्रिय एवं प्रतिभाशाली मानी गई हैं। इनके अतिरिक्त, नीदरलैंड की महारानी जूलियना और इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया को इतिहास पर काफी छाप पड़ी है। इधर भारत में भी पूर्व में श्रीमती इन्दिरा गांधी, इज़राईल में श्रीमती गोल्डा मीयर तथा श्रीलंका में श्रीमती भण्डारनायके ने काफी ख्याति पाई है। अत: अब तक पुरुष यह जो आक्षेप नारी पर लागते आये हैं कि नारी शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टि से या साहसिक तौर पर कमज़ोर है, व्यावहारिक रूप से ग़लत सिद्ध हो चुके हैं। आज हम देखते हैं कि महिलाएँ वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, मजिस्ट्रेट, पुलिस अधिकारी इत्यादि के रूप में पुरुष की भाँति ही कार्य कर रही हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही जापान की महिला ने संसार के सबसे ऊंचे पर्वत-शिखर-माउण्ट एवरेस्ट पर पहुँच कर यह सिद्ध कर दिया है कि साहस और सहनशीलता में और कठिनाइयों और विषम परिस्थितियों का सामना करने में भी नारियां, पुरुषों की अपेक्षा दुर्बल नहीं हैं। महिलाओं ने अन्तरिक्ष यात्रियों के तौर पर चाँद पर जाकर तथा बौद्धिक कुशलता-सम्बंधी कार्यों में भी भाग लेकर सिद्ध कर दिया है कि वे पुरुषों से किसी भी तरह हीन नहीं हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए कहना होगा कि नारी अबला नहीं है परन्तु सबला है।

नारी द्वारा स्वर्ग का द्वार खोला जा रहा है

इस प्रकार हम देखते हैं कि बीज रूप में नारियों में अनेकानेक ऐसी दिव्यताएँ, शक्तियाँ अथवा योग्यताएँ हैं जिन्हें सींचने से वह आध्यात्मिक शक्ति एवं दिव्य गुणों से इतनी महान् बन सकती हैं कि सारे जगत को पलट कर रख सकती हैं। परन्तु इस कार्य को कोई भी मनुष्य नहीं कर सका; उसके लिए यह कार्य सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक रूप में सम्भव था भी नहीं, क्योंकि वह तो नारी को 'नरक का द्वार' मानता रहा; उसे माया का रूप अथवा सर्पिणी बताता रहा तथा नारी को ईश्वरीय ज्ञान का अध्ययन भी निषिद्ध बताता रहा। अत: परमपिता परमात्मा शिव जिन्हें 'अर्धनारीश्वर' भी कहा गया है और 'माता एवं पिता' भी, उन्होंने यह कार्य किया है। उन्होंने 'प्रजापिता ब्रह्मा' के माध्यम से कन्याओं-माताओं को सहज रीति से ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग तथा दिव्य गुणों की शिक्षा देकर शक्तिरूपा बना दिया है। अब यह अहिंसक शिव-शक्ति सेना, यह श्वेत-वस्त्र धारिणी ब्रह्माकुमारीयाँ ही नर-नारी में समान रूप से मनो-परिवर्तन लाकर, उनके संस्कारों को पवित्र बना कर सतयुग की स्थापना कर रही हैं। दूसरे शब्दों में 'नारी नरक का द्वार है' वे इस उक्ति को गलत सिद्ध करती हुई स्वर्ग का द्वार खोल रही हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है? इसलिए आज भी आगंतुक ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में आकर स्वर्ग का अनुभव करते हैं।

सुषुप्त शक्तियों को जागृत करें

आज के ज़माने में परिवार की ज़िम्मेवारी उठाना तो ज़रूरी है ही लेकिन साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि हम आध्यात्मिक रूप से सशक्त हों। हमें परिवार की ज़िम्मेवारी को छोड़ना नहीं है लेकिन आध्यात्मिकता के लिए समय ज़रूर निकालना है। बैलेन्स रखो, शरीर भी देखो और आत्मा की भी उन्नति करो। इस ईश्वरीय शक्ति से हमारे भीतर बहुत हिम्मत आ जाती है और हर परिस्थिति से सामना करने की ताकत आ जाती है। महिलाएं अपनी दृढ़ता की शक्ति से बहुत आगे बढ़ सकती हैं, अपनी सुषुप्त शक्तियों को जागृत करके, शिव शक्ति जो उन्हीं के शक्ति स्वरूप का गायन है उसे सार्थक कर सकती हैं। अभी ज़रूरी है कि हम अपना जीवन अपने हाथ में लेकर और अपने परिवार को भी मार्गदर्शन देकर उन्हें भी आध्यात्मिकता की राह पर अग्रसर करें। इसके लिए आपको घरबार छोड़ कर सन्यासी बनने की आवश्यकता नहीं बल्कि आप अपने घर को ही आश्रम बना सकते हैं।

-ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशक ज्ञानसरोवर, माउण्ट आबू

शिव शक्ति-स्वरूपा है नारियाँ

नारियां स्वयं में ही शिव शक्ति स्वरूपा हैं। सिर्फ उन्हें अपनी शक्तियों को पहचानना है। रशिया में भाषाएं भिन्न होते हुए, संस्कृति भिन्न होते हुए भी हमने पिछले एक दशक से फैमिली वैल्यूज़ के प्रोजेक्ट के अंतर्गत अष्टभुजाधारी दुर्गा के चित्र को रखकर वैल्यूज़ के बारे में महिलाओं को जागृत किया और उनमें यह अहसास जागृत भी हुआ कि हमारे अंदर ही यह शक्तियां हैं और हमें ही पुन: देवी-देवता जैसा बनना है। और उसके लिए परमात्मा के साथ अपना नाता जोड़कर बल प्राप्त करना है। आज हज़ारों महिलाएं इसमें जुड़ गई हैं और पूर्णत: परमात्मा के निर्देश और उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर पवित्रता के मार्ग पर अग्रसर हैं। उनके जीवन में आए चमत्कारिक बदलाव से उन्हें निश्चय हुआ कि यह परमात्मा का ही कार्य है और वो सदा ही हमें शक्ति प्रदान कर रहा है। तो महिला दिवस के उपलक्ष्य में मेरी यही शुभकामना है कि अपने जीवन को पर्पज़फुल बनाएं और अपने को सबल बनाएं।

- ब्र.कु. सन्तोष, राजयोग शिक्षिका, सेंट पीटर्सबर्ग रशिया।

नारी शक्ति

-ब्र.कु.संध्या

भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का जो संतुलन देवियों में है, उसका आज की नारी में सर्वथा अभाव दिखाई देता है। एक-पक्षीय अनुसरण के सन्दर्भ में, भौतिक क्षेत्र में उसने एक से बढ़कर एक ऊँचाइयों को छुआ है परन्तु दूसरे पक्ष अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना करने से उसका यह प्रयास पूर्ण सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है।

भारतीय संस्कृति में नारी का गौरवपूर्ण, पूज्य स्वरूप एवं आदि-शक्ति देवी के रूप में सर्व गुण सम्पन्न स्वरूप विशेष प्रतिष्ठित है। इसमें तपस्या की देवी उमा, धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती एवं शक्ति की देवी दुर्गा मुख्य है।

आज की नारियां इन्हीं शक्तियों की वंशज हैं परन्तु भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का जो संतुलन आदि देवी में है, उसका आज की नारी में सर्वथा अभाव दिखाई देता है। एक-पक्षीय अनुसरण के सन्दर्भ में, भौतिक क्षेत्र में उसने एक से बढ़कर एक ऊँचाइयों को छुआ है परन्तु दूसरे पक्ष अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना करने से उसका यह प्रयास पूर्ण सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है।

वर्तमान नारी भी अपनी मनोकामनायें पूर्ण करने के लिये ईशभक्ति करती है। कुलवधू के रूप में घर-परिवार को धन-धान्य से सम्पन्न करने के प्रयास के कारण उसे लक्ष्मी का पद प्राप्त होता है। माँ सरस्वती की वारिस बनकर आज वह शिक्षा एवं अध्ययन के क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर रही है। माँ दुर्गा का अनुसरण करते हुये सेना व पुलिस में अपना योगदान देकर वह देश के शत्रुओं एवं असामाजिक तत्वों के नाश में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। परन्तु फिर भी उसमें आदि शक्ति की तुलना में दिव्यता, पवित्रता और गुण सम्पन्न स्थिति का अभाव है। अब प्रश्न उठता है कि उसमें ये दिव्यगुण कहाँ से आयेंगे? इन आदि शक्तियों को किसने इन गुणों से सजाया? उसी आध्यात्मिक वैभव को पुन: विकसित करने की आवश्यकता है।

आदि शक्ति का स्रोत- अनादि, आदि पिता

नारी को पुन: आदि शक्ति के पूज्य स्थान पर प्रतिष्ठित करने का कार्य, निराकार परमपिता परमात्मा शिव संगमयुग पर, परमधाम से इस साकार सृष्टि में आदि पिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर करते हैं। परमात्मा शिव ही सर्व आत्माओं के अविनाशी,अनादि परमपिता हैं। परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और योग की शिक्षा से नारी में आध्यात्मिक शक्ति का संचार होने लगता है। अनादि गुणों के अनुभव से उसका सोया स्वमान जागृत हो जाता है और इस प्रकार परमात्मा शिव एवं प्रजापिता ब्रह्मा की अलौकिक मार्गदर्शना से साधारण नारी शक्ति-स्वरूपा बन जाती है।

परमपिता परमात्मा आध्यात्मिक रूचि वाली कन्याओं-माताओं का एक विशाल संगठन तैयार करते हैं और पतित सृष्टि को पावन बनाने के पुनीत कार्य में उन्हें ही निमित्त बनाते हैं। कमलपुष्प के समान न्यारा, पवित्र और निर्लिप्त जीवन बनाकर ईश्वरीय ज्ञान की समझ, सहज राजयोग के अभ्यास तथा दिव्य गुणों की धारणा द्वारा पवित्रता के आसन पर विराजमान होकर, ईश्वरीय सेवा के महान कार्य में नारी सहायक बन जाती है। नारी को, ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सृष्टि के आदि, मध्य व अन्त का ज्ञान होने के साथ-साथ स्वस्वरूप, स्वलक्ष्य, स्वधर्म की भी जागृति आ जाती है। इस शक्ति से वह स्वयं को, समाज में अपने प्रति प्रचलित कुमान्यताओं और बन्धनों से मुक्त कर पाती है। राजयोग के अभ्यास से उसमें तपस्या की शक्ति भर जाती है, जिससे विघ्न उसे पथ से विचलित नहीं कर पाते। लक्ष्मी-नारायण बनने के लक्ष्य को सामने रखने से दिव्य गुणों की धारणा सहज ही जीवन में होने लगती है। इसी आधार पर विश्व परिवर्तन के महान कार्य में परमात्मा शिव की पूर्ण सहयोगी भुजा के रूप में वह कार्य कर रही है।

नारी-परिवार रूपी रथ का आधार

संसार में प्रत्येक व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है। अनेक परिवारों से समाज, समाज से राष्ट्र एवं राष्ट्र से इस वृहद विश्व का निर्माण हुआ है। परिवार को यदि एक सुन्दर एवं सुसज्जित रथ मानें तो स्त्री एवं पुरुष इस परिवार रूपी रथ के दो पहिये हैं। परिवार की उन्नति एवं संतुलित विकास के लिये दोनों पहियों का समान एवं मज़बूत होना आवश्यक है। परन्तु हम देखते हैं कि हर युग में नर एवं नारी की स्थिति एक समान नहीं रही है वरन् परिवर्तित होती रही है।

सतयुग में, जो सृष्टि का आदिकाल था, नर एवं नारी दोनों को समान अधिकार थे तथा नारी को देवीपद व पूर्ण-सम्मान प्राप्त था। यहाँ श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का सम्पूर्ण सुख-शान्ति से सम्पन्न अटल दैवी स्वराज्य था। 1250 वर्ष पश्चात् श्री राम एवं श्री सीता के राज्य वाले त्रेतायुग का आरंभ हुआ, जहाँ सतयुग की तुलना में नर एवं नारी में दो कलाएँ कम थीं परन्तु फिर भी नारी का स्थान यथावत् सम्मानपूर्ण एवं समान था। इन दोनों युगों के लिये ही गायन है, नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। लेकिन त्रेतायुग के पश्चात् द्वापरयुग में नारी की स्थिति में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ। देह-अभिमान के कारण समाज में पुरुष प्रधान व्यवस्था होने लगी और नारी को पुरुष से निम्न दर्जे का आंका जाने लगा। पुरुष का प्रकृति पर विजय प्राप्त करना और आत्मा को पुरुष तथा प्रकृति को स्त्रीलिंग कहना, इनके यथार्थ भाव को न समझने के कारण पुरुष तन की आत्मा, स्त्री तन की आत्मा का शोषण करने लगी। इस प्रकार नारी, अनेक प्रकार के शोषण, अत्याचार एवं भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार होने लगी। उसकी स्थिति दीन-हीन याचक जैसी होने लगी। इस असमानता से उत्पन्न दु:ख की मुक्ति के लिये अनेक धर्मपिता सद्गुणों का उपदेश देने के लिये अवतरित होने लगे परन्तु नारी को कमतर समझने का यह दौर समाप्त नहीं हुआ और कलियुग में स्थिति और भी दयनीय हो गई। नारी आए दिन बलात्कार, मारपीट, हत्या तथा अमानवीय अत्याचारों की भुक्तभोगी बनने लगी। परिणामस्वरूप परिवार रूपी रथ असंतुलित होकर बिखरने लगा। कलियुग के अन्तिम समय में अबलाओं की पुकार सुनकर स्वयं सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ निराकार परमात्मा शिव परमधाम से पिताश्री ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर नारी को उसका खोया सम्मान एवं गौरव पुन: प्राप्त करवाते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग के द्वारा उसके सुषुप्त दैवी गुणों एवं शक्तियों को पुन: जागृत कर उसे देवी पद पर आसीन करते हैं। यह श्रेष्ठ ईश्वरीय कर्तव्य अभी चल रहा है। अभी ही नारी अपने जीवन को श्रेष्ठ हीरे-तुल्य बना सकती है और घर-संसार को आश्रम बनाकर स्वर्ग समान बना सकती है। याद रखिये - अभी नहीं तो कभी नहीं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नारी शक्ति का एक जीता-जागता अनोखा मिसाल है। यह विश्वविद्यालय स्थापना काल से ही देश-विदेश को ऐसा नेतृत्व प्रदान करता आ रहा है जिसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। 30-40 के दशक में जब महिलाओं को हेय दृष्टि से देखा जाता था तब 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा' ने कन्याओं और माताओं को आगे कर अध्यात्म की अलख जगाई और विश्व इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की। उन्होंने परमात्मा शिव बाबा की प्रेरणानुसार इन्हें हर गुण और कला से सम्पन्न बनाया। उन्होंने नारी शक्ति को आगे कर यह सिद्ध कर दिखाया कि महिलाएं भी किसी से कम नहीं हैं। आज भौतिकता से लुप्त नारी किसी दृष्टि से मनुष्य के हित में नहीं है। संस्कार विहीन नारी समाज मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी है। परन्तु चिंता की जरूरत नहीं क्योंकि परमात्मा शिव की शिव-शक्तियाँ ब्रह्माकुमारियाँ बहनें व मातायें नए समाजके निर्माण का श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं...

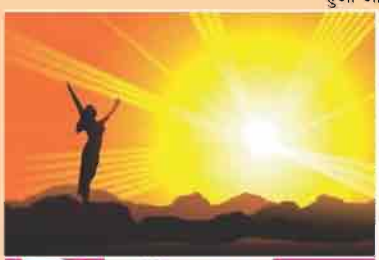

Women

Will power - मनोबल - को प्रतिबिम्बित करता है। विश्व इतिहास में ऐसे अनेक मिसाल हैं जब नारियों ने अपने दृढ़ मनोबल द्वारा कठिन परिस्थितियों में विजय प्राप्त की।

Oneness - एक ही लगन में मगन हो जाना - जहाँ भी मनुष्य की लगन जग जाती है, वहाँ उसे सफलता प्राप्त हो जाती है। फिर चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक या आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र हो। मीराबाई ने एक कृष्ण से लगन लगाकर, अपने आराध्य समान उच्च स्थिति को प्राप्त किया।

Might - शक्ति - जब आत्मा की आन्तरिक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं तो नारी अबला नहीं, शक्ति स्वरूपा बन जाती है। शिव शक्ति, दुर्गा, काली, अम्बा बनकर वह विश्व से दुर्गुणों एवं बुराइयों का विनाश करने के महान् कार्य में सहयोगी बन जाती है।

Enlightment - दिव्यता - ज्ञान के प्रकाश से स्वाभाविक गुणों जैसे स्नेह, त्याग, सहनशीलता, करुणा आदि में दिव्यता आ जाती है और नारी सबको मनोकामना पूर्ण करने वाली जगदम्बा बन जाती है।

Nobility - उदारता - माँ का हृदय भी उदार, विशाल होता है। अपने इस गुण से वह परिवार के सभी सदस्यों की कमियों को समाकर, परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है।

नारी-शक्ति की अभिव्यक्ति

सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। नारी कठिन परिस्थितियों के समय यातनाओं को सहकर भी अपने आवेगों पर नियंत्रण रखने में अत्यधिक कुशल है। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अधिकतर हिंसात्मक तौर-तरीके नहीं अपनाती। प्रकृति के समान नारी के स्वभाविक संस्कार, सहनशीलता, धैर्य, उदारता एवं दातापन के हैं। प्रकृति अपनी असीम सम्पदा से विश्व को सम्पन्न करती है और नारी अपने हर कार्य से परिवार में उन्नति एवं सम्पन्नता लाने का प्रयास करती है। उदाहरण के लिये प्रकृति में पानी के चक्र को लें। सागर का पानी सूर्य की गर्मी से बादल बनकर जब खेत-खलिहानों, पहाड़ों, मैदानों में बरसता है तो जड़, चेतन सभी प्रकृति को इस देन से खिल उठते हैं। इसी प्रकार, नारी भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों की गर्मी को सहकर भी परिवार के सदस्यों को अपने प्रेम, सरलता, ममता से हर्षित रखने का प्रयास करती है। अपने इन गुण रूपी मोतियों से घर को सुरक्षित रखती है। ऐसे अनेक नारी चरित्रों से इतिहास गौरवान्वित हुआ है। उदाहरण के लिये - झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध साहस और वीरता का परिचय दिया। अहिल्या बाई होलकर ने निमित्त भाव धारण कर अपने राज्य की बागडोर सफलतापूर्वक सम्भाली। माता जीजाबाई ने सुपुत्र वीर शिवाजी को बाल्यकाल से ही निर्भयता, वीरता के पाठ पढ़ाकर चरित्रवान बनाया। सरोजनी नायडू ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। माँ मदलसा ने अपने हर बच्चे को आत्मज्ञान का पाठ पढ़ाकर अलौकिक मार्ग की ओर अग्रसर किया। फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने मरीजों की निःस्वार्थ सेवा कर विश्व में अनोखी मिसाल कायम की। अत: नारी के अन्तर्मन में शक्तियों का अजस्र स्रोत है। जहाँ-जहाँ उसे अवसर मिले, उसने स्वयं को सर्वश्रेष्ठ एवं सुयोग्य सिद्ध किया है। अब जबकि स्वयं परमात्मा अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान दे रहे हैं तथा ज्ञान कलश बहनों-माताओं के सिर पर रखा है, तो नारियों को विश्वकल्याण के इस महान् कार्य में स्वयं को लगाकर अपने गुणों का सबूत देना है।

नारी चरित्र निर्माता

नारी सृजन-देवी के रूप में प्रतिष्ठित है तो साथ-साथ जीवन के विकास एवं निर्माण की भी ज़िम्मेवार है। इस विकास प्रक्रिया में सन्तान को श्रेष्ठ चारित्रिक मूल्य प्रदान करने का कार्य नारी के हाथों ही सम्पन्न होता है। ऐसे अनेक महान् सपूत मातृ शक्ति ने समाज को प्रदान किये हैं जिनके चरित्रों से विश्व प्रकाशित हुआ है। महात्मा बुद्ध, महावीर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि आज संसार में महान् विभूतियों के नाम से जाने जाते हैं। ये विभूतियां मातृशक्ति की चरित्र निर्माण की दायित्व भावना से ही निर्मित हुई हैं।

जिस प्रकार कुम्हार, कच्ची मिट्टी के गोले को हाथों का सहारा देकर, दर्शनीय एवं उपयोगी आकार में परिणित कर देता है, उसी प्रकार माँ भी अबोध बालक में, स्नेहपूर्ण पालना एवं मार्गदर्शन से श्रेष्ठ संस्कारों का सिंचन करती है।

माता ही बालक की प्रथम गुरु है, वही बालक की प्रारंभिक पाठशाला है। प्रकृति प्रदत्त गुरुपद द्वारा वह मधुरता, शालीनता, संतुष्टता, गम्भीरता, अनुशासन, ईमानदारी, आत्मसंयम जैसे अनेक गुणों से बालक को सहज ही सुसज्जित कर सकती है। ये वे सच्चे आभूषण हैं, जो मातृशक्ति द्वारा ही बच्चे को पहनाये जा सकते हैं। इसलिए माँ का स्वयं का चरित्र ऊँच और महान् हो, वह गुणों की स्वरूपा हो, यह आवश्यक है।

संकटमय संकुचित सोच की संजीवनी है - नारी

-ब्र.कु.निधि, कानपुर

इतिहास गवाह है कि झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, मेवार की महारानी व महाराणा प्रताप की माँ जैवन्ता बाई, सीता, सावित्री और सती अनुसूया (महर्षि अत्री की पत्नी जिन्होंने सतीत्व के बल से ब्रह्मा विष्णु और महेश को छोटे बच्चे बना दिया था) जैसी नारियों को अपने पति का सहयोग एवं साथ देने के लिए देवी की तरह पूजा गया।

इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ती नारी नित्य नई भूमिकाओं में सफलता के नए झंडे गाढ़ रही है। जो स्त्री कल तक अबला, दुर्बल व कमज़ोर समझी जाती थी और जिसे कदम-कदम पर पुरुष के सहारे की ज़रूरत पड़ती थी आज वो घर, समाज सब जगह स्वयं को सशक्त पहचान बनाने में कामयाब हो रही है। नारी की नई सहस्राब्दी में सर्वदा एक नई छवि उभर रही है।

राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर

इस संदर्भ में राष्ट्र-निर्माता स्वामी विवेकानंद ने वर्षों पहले कहा था - किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें महिला शक्ति का उद्धारक नहीं, वरन उनका सहायक, साथी बनना चाहिए। भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्हीं भी स्त्रियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। ज़रूरत है, उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के सुनहरे भविष्य की संभावनाएँ बलवती हैं।

आज की नारी जीवन के सभी आयामों में ढलकर सर्वश्रेष्ठ नायिका की भूमिका बखूबी निभा रही है। माँ, बहन, पत्नी, बेटी, बहू आदि सभी रिश्तों को निभाने के साथ-साथ बाहरी दुनिया में भी महिलाएँ कामयाबी के परचम लहरा रही हैं। कल की साधारण-सी गृहिणी आज कुशल प्रबंधक बनकर अपने कार्यों, दायित्वों का निर्वहन कर रही है। अपनी नई भूमिका में वह बेहद सृजनशील व सूक्ष्म नज़र आ रही है। स्त्री की बदलती भूमिका के संबंध में उद्यमी प्रियम्वदा बहन का कहना है कि ''मेरे पति ने मुझे बिज़नेस करना सिखाया। घर से बाहर निकलने का अवसर दिया और हर काम में साथ रखा। मुझे पेंटिंग का शौक था। पति ने पेंटिंग का सामान लाकर दिया व अपनी कला को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया। यही नहीं जब मेरा बेटा केवल नौ महीने का था तब कार चलाना भी सिखाया। आज मैं उनके न रहने पर स्वतंत्र रूप से बिज़नेस तथा घर की ज़िम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन कर रही हूँ।'' इससे यह सिद्ध होता है कि महिलाएं ज़रूरत पड़ने पर कोई भी रोल निभाने की प्रतिभा रखती है। बस उसे मौके की तलाश रहती है।

महिला अधिकार : वही पुरानी सोच एवं नज़रिया

तकरीबन भारत की आधी जनसंख्या महिलाओं की है। सन् 2011 के जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार भारत में हर 1000 पुरुषों के अनुपात में 917 महिलाएँ हैं केवल। पुरुष प्रधान समाज में नारी को सदा अबला व कमज़ोर समझा जाता रहा है। शारीरिक दृष्टिकोण से महिलाएँ पुरुषों से अधिक कोमल, नाज़ुक तथा दुबली-पतली होती है परंतु स्वभाव-संस्कार से वो ज़्यादा सहनशील, शांत, दृढ़विश्वासी एवं ममतामयी होती हैं, फिर भी संसार भर में स्त्रियाँ दूसरे दर्जे की ज़िम्मेदारियाँ संभाल रही हैं। पौराणिक कथाओं, वेदों, उपनिषद आदि में पतिव्रता नारियों को बहुत आदर एवं प्रशंसा भाव से देखा जाता था। एक बेटी, एक पत्नी, एक माँ, दादी इत्यादि की भूमिका ही जीवन भर निभाने के लिए विवश थी तब

बंदिशों एवं रोक-टोक के बावजूद बनाई पहचान

इन सब बंदिशों एवं रोक-टोक के बावजूद भारतीय नारी ने घर की दहलीज़ को लांघ कर हर क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान बनाई है। बैंकों की चेयरपर्सन, सी.ई.ओ, कॉरपोरेट कंपनियों की बागडोर संभालने से लेकर भारतीय पुलिस सेवा, प्रशासनिक सेवा एवं वायु सेना आदि में महिलाएं महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। महिला उद्यमियों जैसे बायोकॉन इंडिया प्रा.लि. की किरन मजूमदार शॉ, पेप्सिको की निर्देशिका इंदिरा नूई, रिलायंस इंडस्ट्रीज़ की नीता अंबानी, सेंटर फॉर एनवायरमेंट स्ट्डीज़ की सुनीता राव इत्यादि ने पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रों में अपनी एक पुख्ता पहचान बनाई है। पी.टी.उषा, साइना नेहवाल, शाइनी विलसन, सानिया मिर्ज़ा, कल्पना चावला, तीजन बाई आदि ने देश व विदेश में भारत का सिर गर्व से ऊँचा किया है। साहित्य के क्षेत्र में भी नई पीढ़ी में अरुंधती रॉय (बुकर पुरस्कार से सम्मानित), अनीता देसाई, जुम्पा लहरी (पुलित्ज़र पुरस्कार से सम्मानित), तस्लीमा नसरीन इत्यादि ने स्त्री भावनाओं एवं दृष्टिकोण को खुलकर समाज के सामने रखने का साहसपूर्ण और सराहनीय कार्य किया है। कुछ समय पहले ही देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल बनी थीं जिन्होंने सौम्यता तथा शालीनता का अद्भुत उदाहरण सारी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। ग्रामीण महिलाओं की राजनीति में भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु हमारी सरकार ने संसद में बिल पास किया। जिसके तहत संसद एवं अन्य चुनावी संस्थाओं की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर ली गईं। सन् 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मान्यता देने की घोषणा की गई। इस कदम से महिलाओं की स्थिति में सुधार होना आरंभ हुआ और नारी सशक्तिकरण को बल मिला है। इसी जज़्बे को सलाम करते हुए भारतीय सरकार ने प्रथम महिला बैंक निर्भया का शुभारंभ किया है।

औरत। इतिहास गवाह है कि झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, मेवार की महारानी व महाराणा प्रताप की माँ जैवन्ता बाई, सीता, सावित्री और सती अनुसूया (महर्षि अत्री की पत्नी जिन्होंने सतीत्व के बल से ब्रह्मा विष्णु और महेश को छोटे बच्चे बना दिया था) जैसी नारियों को अपने पति का सहयोग एवं साथ देने के लिए देवी की तरह पूजा गया। यह भी मान्यता थी कि जो पत्नी अपने पति की सेवा में जीवन निकालती है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। रानी लक्ष्मी बाई, जैवन्ता बाई, चाँद बीबी जैसी वीरांगनाओं ने अपने अदम्य साहस, सूझ-बूझ तथा रण-कौशल से अंग्रेजी शासन को मुँह तोड़ जवाब देकर अमर नायिकाओं में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज़ कराके भारत में नया इतिहास रचा। इसके बावजूद हर युग में, हर समाज में स्त्रियों को दोयम दर्ज़े का नागरिक माना जाता रहा है। आज़ादी के बाद देश के संविधान द्वारा पुरुषों और महिलाओं दोनों को सभी क्षेत्रों में समान अधिकार दिए गए। परंतु वास्तविकता यह है कि बहुत जगह आज भी स्त्री को समान हक नहीं मिला हुआ है। जिसके कई कारण हैं जैसे :- (1) सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाज़ व रूढ़ियाँ (2) स्त्रियों का एक बड़ा प्रतिशत साक्षर नहीं है (3) महिला अधिकारों की अवहेलना (4) पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण मानसिकता (5) मौजूदा सामाजिक व्यवस्था।

बड़ी तस्वीर को देखना होगा।

स्पेस में जाने वाली पहली भारतीय महिला, कल्पना चावला, का मृत्यु के पूर्व यही कहना था कि महिलाओं को वही करना चाहिए जो करने की वास्तविक इच्छा उन्हें है।

उन्होंने एक बार कहा था कि स्पेस में जब वे थीं तो उन्हें केवल अपने विचारों का ही भान था। बाकी, शरीर तो वज़नरहित होने कारण महसूस ही नहीं हो रहा था। केवल अपनी आंतरिक ऊर्जा को महसूस कर उन्हें अत्यंत हर्ष का अनुभव हुआ था।

उन्होंने यह भी कहा कि मैं धरती माँ के लिए अपनी ज़िम्मेवारियों के प्रति जागृत भी हुई। मैं जब धरती पर लोगों को छोटी-छोटी बातों पर लड़ते-झगड़ते देखती हूँ तो मुझे दुःख भी होता है और आश्चर्य भी। हम इन मामूली से भँवरों में फँसे हुए हैं और इस उधेड़बुन में एक पूरी नदी को भूल जाते हैं। हमें बड़ी तस्वीर को देखना होगा। मैं किसी देश की नहीं समस्त दुनिया की नागरिक हूँ। मेरी आँखों में पूरी धरती और नीले आकाश का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

- कल्पना चावला

उनके कौशल एवं जज़्बे ने बनाई पहचान

भारतीय नारी जिसे अबला कहा जाता रहा है, ने आज अपने कौशल एवं जज़्बे से विश्वभर में अपनी एक अलग पहचान कायम की है, आज भारतीय महिलाएँ चूल्हे-चौके से बाहर आकर परिवार, समाज व देश निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। इसी संदर्भ में सन् 1937 में परमपिता शिव के आदेश पर ब्रह्मा बाबा द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में माताओं व कन्याओं को हर कार्य में शिव भगवान ने आगे रखा और ज्ञान कलष उनके ऊपर रखा। संस्थान की स्थापना होने से लेकर आज तक सभी विभागों तथा समस्त कार्यों में दादियों, बड़ी बहनों, माताओं, छोटी कन्याओं ने ईश्वरीय सेवाओं को करने एवं सेवाओं के विस्तार में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके परिणामस्वरूप आज विश्व के 137 से अधिक देशों में करीबन 9500 सेवा केन्द्र, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा खोले जा चुके हैं तथा शिव-पिता, ब्रह्मा-माँ के आशीर्वाद व दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी एवं अन्य ईश्वरीय बहन-भाइयों के अथक प्रयासों से विश्वविद्यालय वृद्धि को पा रहा है। नारी की सहनशीलता, धैर्यता, कोमलता, सहृदयता, ममतामयी छवि, सहिष्णुता आदि गुणों रूपी खज़ाने को पहचानकर परमेश्वर शिव ने उन्हें सतयुगी दुनिया में सभी आत्माओं को ले जाने हेतु अग्र-वाहक बनाया है तो क्यों नहीं हम भी स्त्री को स्वावलंबी एवं आत्म-सम्मान के साथ खड़ा होने में सहयोगी बने जो एक सभ्य समाज के लिए गौरव की बात होगी।

महिला दिवस : कब होगा सार्थक?

फिर एक और महिला दिवस 8 मार्च, 2014 दहलीज़ पर आया। लेकिन महिलाओं को सम्मान, प्रेम, स्नेह देने हेतु मनाया जाने वाला विश्व महिला दिवस कहाँ तक अपने उद्देश्य में सफल हुआ है? हालांकि नारी को स्वतंत्रता तथा अधिकार मिलने लगे हैं लेकिन आज भी समाज में स्त्री की वो अहमियत नहीं है जो पुरुष को है। साथ ही महिला अत्याचार की बढ़ती घटनाओं ने भारतीय नारी की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कहीं अकेले जाने से पहले महिलाओं को सोचना पड़ता है, हरदम डर बना रहता है कि कब, कहाँ, कौन-सा भेड़िया ताक लगाए बैठा है कि शिकार मिलते ही उस पर टूट पड़े। ऐसा कुकृत्य करने वाले पुरुष सारे सभ्य समाज के लिए एक कलंक हैं।

कथा सरिता

राजा ने जाना निरासक्ति का श्रेष्ठत्व

उपनिषदों में एक कथा आती है। एक राजा के मन में एक बहुत ही आकर्षक और मज़बूत महल के निर्माण का विचार आया। उसने अपने मंत्री से विचार-विमर्श किया, सभासदों व परिजनों से राय मांगी। सभी ने उसके विचार से सहमति जताई। राजा ने उत्साहित होकर योग्य कारीगरों को बुलवाया और नक्शा तैयार करवाकर उन्हें महल के निर्माण कार्य में लगा दिया। कुछ ही समय में राजा की कल्पना ने साकार रूप ले लिया और महल बनकर तैयार हो गया। राजा ने महल में प्रवेश के अवसर पर एक बड़ा आयोजन किया और दूर-दूर के राजाओं को निमंत्रित किया। सभी ने महल की दिल खोलकर प्रशंसा की। महल हर कोण से इतना खूबसूरत और दृढ़ था कि उसमें कोई नुक्स नज़र ही नहीं आता था। एक बार एक सन्यासी राजा से मिलने आया। राजा ने उसका सत्कार किया। सन्यासी काफी देर तक राजा से वार्तालाप करता रहा, किंतु महल के विषय में एक शब्द भी नहीं बोला। राजा को हैरानी हुई। अंततः राजा ने सन्यासी को महल घुमाया और उसकी भव्यता और मजबूती के विषय में बताकर पूछा, 'क्या मेरे महल में कोई कमी है, जो आपने इसकी प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं कहा?' तब सन्यासी बोला, 'राजन! तुम्हारा महल वास्तव में बहुत सुंदर और मज़बूत है। यह बहुत लंबे समय तक नष्ट नहीं होगा, किंतु क्या इतना ही स्थिर इसमें रहने वाला होगा? बस, इसी एक कमी के कारण मैने महल की प्रशंसा नहीं की।' राजा सन्यासी की बात की गहराई को समझकर चुप हो गया। कथा दो तथ्यों की ओर संकेत करती है, जीवन की क्षणभंगुरता और मन की अस्थिरता। जो जीवन की अस्थिरता को समझकर मन को हर प्रकार की लालसा से मुक्तकर निरासक्ति में स्थिर कर ले, वही सुख-दुःख से परे होकर अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति करता है।

तीन सवाल

महाराज अकबर, बीरबल की हाज़िरजवाबी के बड़े कायल थे। उनकी इस बात से दरबार के अन्य मंत्री मन ही मन बहुत जलते थे। उनमें से एक मंत्री, जो महामंत्री का पद पाने का लोभी था, ने मन ही मन एक योजना बनाई। उसे मालूम था कि जब तक बीरबल दरबार में मुख्य सलाहकार के रूप में है उसकी यह इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकती। एक दिन दरबार में अकबर ने बीरबल की हाज़िरजवाबी की बहुत प्रशंसा की। यह सब सुनकर उस मंत्री को बहुत गुस्सा आया। उसने महाराज को कहा कि यदि बीरबल मेरे तीन सवालों का उत्तर सही सही दे देता है तो मैं उसकी बुद्धिमता को स्वीकार कर लूंगा और यदि नहीं तो इससे सिद्ध होता है कि वह महाराज का चापलूस है। अकबर को मालूम था कि बीरबल उसके सवालों का जवाब ज़रूर दे देगा, इसलिए उन्होंने उस मंत्री की बात स्वीकार कर ली। उस मंत्री के तीन सवाल थे :- (1) आकाश में कितने तारे है? (2) धरती का केन्द्र कहां है? (3) सारे संसार में कितने स्त्री और कितने पुरुष हैं? अकबर ने फौरन बीरबल से इन सवालों का जवाब देने के लिए कहा और शर्त रखी कि यदि वह इनका उत्तर नहीं जानता है तो मुख्य सलाहकार के पद को छोड़ने के लिए तैयार रहे। बीरबल ने कहा, 'तो सुनिए महाराज' पहला सवाल, बीरबल ने एक भेड़ मंगवाई और कहा जितने बाल इस भेड़ के शरीर पर हैं आकाश में उतने ही तारे हैं। मेरे दोस्त, गिनकर तसल्ली कर लो, बीरबल ने मंत्री की तरफ मुस्कुराते हुए कहा। दूसरा सवाल, बीरबल ने ज़मीन पर कुछ लकीरें खींची और कुछ हिसाब लगाया। फिर एक लोहे की छड़ मंगवाई और उसे एक जगह गाड़ दिया और बीरबल ने महाराज से कहा, महाराज बिल्कुल इसी जगह धरती का केन्द्र है, चाहें तो आप स्वयं जांच लें। महाराज बोले ठीक है अब तीसरे सवाल के बारे में कहो। अब महाराज तीसरे सवाल का जवाब बड़ा मुश्किल है क्योंकि इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो ना तो स्त्री की श्रेणी में आते है और ना ही पुरुषों की श्रेणी में। उनमें से कुछ लोग तो हमारे दरबार में भी उपस्थित हैं जैसे कि ये मंत्री जी। महाराज यदि आप इनको मौत के घाट उतरवा दें तो मैं स्त्री-पुरुष की सही सही संख्या बता सकता हूं। अब मंत्री जी सवालों का जवाब छोड़कर थर-थर कांपने लगे और महाराज से बोले, महाराज बस-बस मुझे मेरे सवालों का जवाब मिल गया। मैं बीरबल की बुद्धिमानी को मान गया हूं। महाराज हमेशा की तरह बीरबल की तरफ पीठ करके हंसने लगे और इसी बीच वह मंत्री दरबार से खिसक गया।

श्रद्धा के सहारे लक्ष्मण को मिला ज्ञान

गुरु से ज्ञान हासिल करने के लिए शिष्य में श्रद्धा भाव का होना बहुत आवश्यक है और यह श्रद्धा शिष्य में विनय के रूप में प्रकट होती है। इस संदर्भ में रामायण में एक अच्छा प्रसंग दिया गया है। लंका नरेश रावण अपने दुराचार के लिए कुख्यात था और इस वजह से लोगों की अश्रद्धा एवं घृणा का पात्र बन गया था, किंतु यह भी सत्य है कि वह परम ज्ञानी भी था। रावण वेद-शास्त्रों का महान ज्ञाता था। उसने ज्ञान की पराकाष्ठा को छू लिया था। बस, व्यवहार से उसने अपने ज्ञान का सही उपयोग नहीं किया। श्रीराम इस बात को भलीभांति समझते थे। वे रावण के ज्ञान को आदर की दृष्टि से देखते थे। ज्ञानवान होने के कारण उनके मन में रावण के लिए सम्मान था। इसलिए जब युद्धभूमि में रावण से उनका युद्ध हुआ और अंततः वह उनके बाणों से घायल होकर गिर पड़ा तो श्रीराम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा, 'जाओ लक्ष्मण! रावण से उपदेश ग्रहण करो। वे ज्ञान की प्रतिमूर्ति हैं। तुम्हें उनसे वह दुर्लभ मार्गदर्शन मिलेगा, जो जीवन में सदैव काम आएगा।' रावण की मृत्यु निकट थी और वह बुरी तरह से घायल हो गया था। लक्ष्मण उसी अवस्था में रावण के पास पहुंचे और काफी देर तक उनके पास खड़े रहे, लेकिन रावण ने मार्गदर्शन देना तो दूर एक शब्द भी नहीं कहा। लक्ष्मण ने श्रीराम के पास आकर अपना यह अनुभव सुनाया। तब राम ने उन्हें समझाया, 'तुम विनयपूर्वक एक विद्यार्थी की भांति महापंडित, परमज्ञानी रावण के पास जाओ तो वे तुम्हें निराश नहीं करेंगे।' इस बार लक्ष्मण, श्रीराम के बताए हुए भाव को ग्रहण कर रावण के पास गए तो रावण ने उन्हें राजनीति का महत्वपूर्ण उपदेश दिया। वस्तुतः श्रद्धा के माध्यम से गुरु, विद्यार्थी की जिज्ञासा और पात्रता की परीक्षा लेता है। अपेक्षित श्रद्धा भाव से ही विद्यार्थी, शिष्य बनकर गुरु से ज्ञान पाता है।

सब समान

एक बार की बात है। सूरज, हवा, पानी और किसान के बीच अचानक तनातनी हो गई। बात बड़ी नहीं थी, छोटी-सी थी कि उनमें बड़ा कौन है? सूरज ने अपने को बड़ा बताया तो हवा ने अपने को, पानी और किसान भी पीछे न रहे। उन्होंने अपने बड़े होने का दावा किया। आखिर तिल का तार बन गया। खूब बहस करने पर भी जब वे किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे तो चारों ने तय किया कि वह कल से कोई काम नहीं करेंगे। देखें, किसके बिना दुनिया का काम रुकता है। पशु-पक्षियों को जब यह मालूम हुआ तो वे दौड़े आए। उन्होंने उनके मेल का रास्ता खोजने का प्रयत्न किया पर उन्हें सफलता नहीं मिली। लोग हैरान होकर चुप हो गए। पर दुनिया का काम रुका नहीं। जहां मुर्गा नहीं बोलता, वहां क्या सवेरा नहीं होता? चारों बड़े ही कमेरे थे। खाली बैठे, तो उन्हें थोड़ी ही देर में घबराहट होने लगी। समय काटना भारी हो गया। उनका अभिमान गलने लगा। आखिर बड़ा कौन है? छोटा कौन है? सबके अपने-अपने काम हैं। बड़ा कोई आन से नहीं, काम से होता है। सबसे ज़्यादा छटपटाहट हुई सूरज को। अपने ताप से स्वयं जलने लगा। उसने अपनी किरणें बिखेरनी शुरु कर दी। निकम्मे बैठे होने से हवा का दम घुटने लगा तो वह भी चल पड़ी। इसी तरह पानी और किसान भी अपने-अपने काम में लग गए। वे अच्छी तरह समझ गए कि संसार में न कोई छोटा है, न कोई बड़ा है। सब समान हैं। छोटे-बड़े का भेद तो ऊपरी है।

सूचना

वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन में दो मास के लिए हिन्दी टाइपिंग और ग्राफिक्स डिज़ाइन करने हेतु दो सेवाधारी भाइयों की आवश्यकता है। अनुभवी भाई ही निम्न नम्बर पर सम्पर्क करें: 09414003961

सेवा में
ब्र.कु.मृत्युंजय, शान्तिवन

गया-ए.पी. कॉलोनी (बिहार)। शिवरात्रि पर झंडा फहराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में द्वारिको सुदरानी,सेक्रेट्री समन्वय आश्रम, ब्र.कु.सुनीता, आर.के खंडेलवाल,कमिशनर मगध रेंज, डॉ.पी. शेखर,नेत्र विशेषज्ञ, शांति प्रिय भाई,सेक्रेट्री अखिल भारतीय बौद्ध भिक्षु संघ,बौद्ध गया।

गुड़गांव-हरियाणा। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए म्यूनीसिपल कमिटी के डिप्युटी मेयर यशपाल बत्रा, ब्र.कु.रंजना तथा अन्य।

झालावाड़-राज.। शिव जयन्ती के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु.मीना, वकील विष्णु प्रसाद पाटीदार तथा अन्य।

जम्मू। महाशिवरात्रि पर्व पर झंडा फहराने के पश्चात् मुख्य अतिथि गुलाम हसन मीर,कृषि मंत्री, पूर्व मंत्री आर.एस.चिब, ज़ेड.ए. भट्टी, स्वामी कुमार, ब्र.कु.सुदर्शन, ब्र.कु.रविंदर तथा अन्य।

गांधीनगर-जम्मू। शिवरात्रि पर ध्वजारोहण के दौरान पूर्व मंत्री मूला राम, पूर्व कॉरपोरेटर पवन सिंह तथा ब्र.कु.निर्मल।

केशोद-गुज.। 'शिव जयन्ती महोत्सव' कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. सी.डी. लाडाणी, रोटरी क्लब के प्रमुख कांतिभाई चुडासमा, रजनी भाई फडदु, विधायक अरविंद लाडाणी, जयेश भाई, ब्र.कु.रूपा, ब्र.कु.मीता, ब्र.कु.गीता तथा अन्य।

खुद के लिए समय निकालें तो तनाव-मुक्त जीवन का अनुभव कर सकेंगे

आध्यात्मिक चिंतन का स्रोत कहां है? हमारे यहां ऐसे सेवाकेंद्र हैं, जहां आध्यात्मिक चिंतन आपको मिलता है। कई गांव, शहर ऐसे हैं, जहां ये चिंतन उपलब्ध भी नहीं है। इसलिए आध्यात्मिक चिंतन के लिये नित्य अध्ययन करो, श्रद्धा के साथ। यही भगवान ने कहा है, जिससे सर्व पापों से मुक्त हो जायेंगे।

सारे दिन में अपने लिए अच्छा विचार करने के लिए आधा-पौना घंटा निकल सकता है कि नहीं निकल सकता है। या फिर वही शिकायत, कि टाइम नहीं है क्या कहेंगे? टाइम निकल सकता है। अपने लिए, बाकी भले जितना समय बचे आप दूसरों की सेवा में लगे रहो, आधा-पौना घंटा अपने लिए निकाल सकते हैं कि नहीं निकाल सकते हैं। आज व्यक्ति सुबह उठता है तो उसकी दिनचर्या कैसी होती है? सुबह सबसे पहले उठकर कहेगा कि आज का पेपर आया कि नहीं आया? सुबह-सुबह अपने मन को कौनसा चिंतन देते हैं? वही फास्ट फूड वाला, जो शरीर को भी खराब करता है। इसी तरह का फास्ट फूड हम अपने मन को भी देने लगे हैं। न्यूज़ पेपर के अन्दर के पेज में अच्छी कॉलम आती है। लेकिन लोग क्या पढ़ना चाहते हैं, कौन सा चिंतन पढ़ने के इच्छुक हैं - व्यर्थ चिंतन। नेगेटिव चिंतन से अपने मन को सुबह-सुबह भर लेते हैं। फिर कारोबार पर जाओ तो जिसके पास भी बैठो, बात करो, हरेक के पास बात करने का क्या विषय होता है? वही व्यर्थ की बातें, व्यर्थ चिंतन, नेगेटिव चिंतन टी.वी. चालू करो शाम को तो कौन-सा चिंतन मिलेगा? वही जो घर-घर की कहानियां हैं उसमें समायी हुई मिलती हैं। उसी को ही देखकर के अपने मन को और भी चकमई बना देते हैं। उसके साथ ऐसा हुआ तो मेरे साथ तो ऐसा नहीं होगा? अपने आप से जोड़ने लगते हैं।

अब उससे प्राप्ति क्या हो रही है? ये सब कुछ करने के लिए हमारे पास पूर्ण समय है। आध्यात्मिक चिंतन के लिए समय नहीं है। इसलिए कम से कम अब अपने अंदर ये जागृति ले आओ और अपने लिए समय निकालो। बाद में डिप्रेशन का शिकार होने के बाद समय मिलने वाला नहीं है। समय पूर्ण होगा लेकिन उस समय आध्यात्मिक चिंतन में मन लगेगा ही नहीं।

दूसरा है, मन को भी आराम चाहिए, 'रिलेक्सेशन ऑफ माइंड'। रिलेक्सेशन कैसे मिलेगा? रात को सो जाते हैं तो शरीर सो जाता है लेकिन मन नहीं सोता है। मन तो स्वप्न के अंदर भटकता रहता है। सारी रात कार्य करता रहता है। सुबह उठो तो इतनी थकावट लगेगी कि सुबह उठने के बाद भी फ्रेशनेस नहीं है। क्योंकि सारी रात मन ने तो काम किया है। कोई न कोई स्वप्न के रूप में भटकता रहा है। भटकने वाला इंसान थकेगा या नहीं थकेगा? मन से सारी रात जो भटकता रहा है, वह सुबह उठकर फ्रेशनेस कैसे अनुभव करेगा? इसलिए मन को रिलैक्स करने के लिए कॉनशियस के साथ मेडिटेशन करना चाहिए। मेडिटेशन माना ध्यान। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे मन को शांत करते है। जब मन शांत होता है, तो मन को आराम मिलता है। कितने मिनट ध्यान करना चाहिए और कब ध्यान करना चाहिए? सुबह जब उठते हैं तो बीस मिनट खाली ध्यान करो। सुबह में बीस मिनट अपने लिए निकल सकते हैं या नहीं? सुबह को बीस मिनट और शाम को बीस मिनट। मेडिकल साइंस की एक रिसर्च द्वारा यह पता किया गया है कि एक व्यक्ति पांच मिनट बोयलिंग टेम्पर पर गुस्सा करता है और बहुत ज़ोर-शोर से क्रोध में आ जाता है, तो दो घंटे की कार्य-क्षमता जल जाती है। दो घंटे तक वह अपने मन को एकाग्र नहीं कर सकता है, किसी भी कार्य में। कोई भी निर्णय लेना हो या क्रोध वाली स्थिति में कोई निर्णय भी लेना पड़े, तो वह गलत निर्णय ले लेगा। वो दो घंटा क्या करेगा? वो दस लोगों को ढूंढेगा, जिनके सामने अपने आप को जस्टीफाय करेगा कि मैंने जो इसके ऊपर गुस्सा किया वह ठीक किया। वह रोज़ ऐसा ही करता है, इसे कब तक सहन करता रहूँगा। जब उसको दस व्यक्ति मिल जाते हैं, ये कहने वाले कि हाँ, तुमने ठीक किया, अच्छा किया जो उसको पाठ पढ़ाया आज, तब जाकर के उसका मन रिलैक्स होता है। दस में से एक ने भी अगर यह कह दिया कि ये तुमने ठीक नहीं किया। तुम्हें गुस्सा नहीं करना चाहिए था। तो क्या होगा? फिर से आग भड़क उठती है। उसमें और दो घंटे खत्म हो जाते हैं। इस तरह कई बार व्यक्ति आठ घंटा कुछ नहीं कर पाता है। कहने में भी कहता है कि आज का दिन बेकार चला गया। सारा दिन कोई काम नहीं हुआ। क्रमशः

PEACE OF MIND - TV CHANNEL
Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)
DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 697,
Reliance Big TV: Channel no. 171
Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in
Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day
अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना-ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

प्रश्न - कई लोग ऐसा पूछते हैं कि यदि हम दूसरों को सकाश देंगे तो क्या हमारी शक्तियाँ कम हो जायेंगी? वो ऐसा सोचते हैं कि योग में बाबा आप इनको सकाश दो। तो क्या उचित है, क्या हमें बाबा से शक्तियाँ लेकर देनी चाहिए या डायरेक्ट बाबा से दिलानी चाहिए?

उत्तर - ईश्वरीय महावाक्य है कि जब भक्त दुःखी होकर बाप को पुकारते हैं तो बाप अपने बच्चों को याद करते हैं कि इनको सकाश दो। यहाँ सोचने की बात है कि बाबा स्वयं ही सकाश न देकर हमें सकाश देने को क्यों कहते हैं? क्योंकि हम कल्पवृक्ष की जड़ें हैं, तने हैं। बीज की सम्पूर्ण शक्तियाँ जड़ों के द्वारा ही वृक्ष में जायेंगी, बिना जड़ों के नहीं। इसलिये हमें ये जानना चाहिए कि ईश्वरीय शक्तियाँ, शांति, पवित्रता हमारे माध्यम से ही पूरे कल्पवृक्ष को पहुँचेंगी। दूसरी बात भगवान से तो उनका कनेक्शन है ही नहीं। इसलिये शिव बाबा की सकाश हमारे माध्यम से ही उन तक पहुँचेगी। तीसरी बात क्या शिव बाबा हमारे कहने से सबको सकाश देंगे? उन्हें स्वयं पता है कि उन्हें क्या करना है। इसलिये हम उन्हें सकाश देने को कहें, यह भी यथार्थ नहीं है। दुःखी आत्माओं को सकाश देने से उनके दुःखों के वायब्रेशन्स हमारे पास कभी नहीं आयेंगे क्योंकि योगयुक्त या स्वमान में स्थित होने के कारण हमारे चारों ओर सुरक्षा कवच बना रहता है और हमारी शक्तियाँ भी कम नहीं होंगी क्योंकि हमारे स्वमान से या योगयुक्त होने से निरंतर हमें ईश्वरीय शक्तियाँ मिलती रहेंगी। इसलिये हमें निरंतर योगयुक्त और स्वमानधारी होकर सबको सकाश देते रहना चाहिए, यही ईश्वरीय आज्ञा भी है।

प्रश्न - आजकल अकाले मृत्यु बहुत हो रही है। लोगों में स्वयं को खत्म करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। लोग इसे दुःखों से छूटने का साधन मानने लगे हैं। जिस घर में कोई आत्महत्या करता है, उस घर का माहौल बहुत गमगीन रहता है। दुःखद बात है कि कई परिवारों में आत्महत्या एक प्रथा सी बन गयी है। परिवार में विशेष माँ को ये भूलना बहुत कठिन हो जाता है जब उसका जवान बेटा आत्महत्या कर लेता है, ऐसे में योग के बाद भी चित्त शांत नहीं होता, क्या करें?

उत्तर - जीवन में अति दुःखी, निराश, बेसहारा, तनावग्रस्त या बार-बार असफल होने पर युवक या अन्य कोई मृत्यु के कटघरे में खड़े होने को तैयार हो जाते हैं। अति दुःखी होकर वो सोचते हैं कि यही दुःखों से छूटने का उपाय है, परंतु सभी को ध्यान रहे कि जीवघात करने के बाद मनुष्यात्मा की अति-अति दुर्गति हो जाती है। उसके दुःखों में 100 गुणा वृद्धि हो जाती है। ऐसी आत्मा को पुनर्जन्म भी नहीं मिलता और वो सदा भूखी, प्यासी, दुःखी, अशांत अंधकार में भटकती रहती है। यह अति भयावह स्थिति होती है और इससे निकलना अब उनके हाथ में नहीं होता। इसलिये जिनको भी ये दूषित विचार आते हैं, वे इन विचारों का त्याग करें। उन्हें याद करना चाहिए कि जीवन भगवान की सुंदर सौगात है, इसे नष्ट करना माना उसका अपमान करना है। जीवन में उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख, हार-जीत ये सब तो होंगे। हिम्मत व ईश्वरीय सहयोग से इन्हें पार करना है। अपने जीवन को नष्ट करना माना अपने सम्पूर्ण भविष्य को नष्ट कर देना होगा इसलिये राजयोग के द्वारा स्वयं में बल भरें। ईश्वरीय सेवा में स्वयं को व्यस्त करें और किसी को अपने मन की बात कहकर उनकी मदद लें। जिन घरों में ऐसा होता है, वहाँ से तो खुशी व चैन लंबेकाल के लिए जैसे विदाई ले लेती है। उस घर में पुनः खुशी व शांति के वायब्रेशन्स पैदा करने चाहिए। जो आत्माएँ गयी हैं, उन्हें कुछ दिन तक रोज़ एक घण्टा योगदान करना चाहिए और उन्हें भोग भी लगवा देना चाहिए। जब किसी माँ का जवान बच्चा आत्महत्या कर लेता है तो माँ-बाप का दिल तो टूट ही जाता है। उन्हें उसकी याद बार-बार सताती है और जीवन के सुखों से दूर ले जाती है। ऐसे में प्रथम तो इस अनहोनी घटना को स्वीकार करके आगे की ओर देखना चाहिए। यद्यपि स्वीकार करना अति दुष्कर कार्य होता है, परंतु चूँकि अब इस दुर्घटना को टाला नहीं जा सकता इसलिये इसे स्वीकार करके आगे बढ़ना ही चाहिए और सवेरे उठते ही 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। रात में सोने से पूर्व लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ। प्रतिदिन मुरली क्लास में अवश्य जाएँ और कुछ समय यज्ञ सेवा में व्यतीत करें। इससे मन शांत होगा और उनको भी योगदान दे सकेंगे।

प्रश्न – मुझे जुआ खेलने की आदत पड़ी हुई है, मैं इसमें बहुत पैसा गँवा देता हूं। मुझमें और कोई बुरी आदत नहीं है, मुझे इस आदत से छूटने की विधि बताएँ? मैं प्रतिदिन मुरली क्लास में भी नहीं जा पाता हूँ, यद्यपि मैं जाना चाहता हूँ। मेरे अंदर यह दृढ़ इच्छा है कि मैं एक अच्छा योगी बनूँ, मैं क्या करूँ?

उत्तर - ईश्वरीय ज्ञान ले लेने के बाद आपको यह मालूम हो गया होगा कि आप तो देवकुल की महान आत्मा हो। ये बात हमे स्वयं भगवान ने बताई है। सवेरे उठते ही 7 बार याद किया करो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, देव कुल की महान आत्मा हूँ, मैं भगवान का बच्चा हूँ, जुआ खेलना मुझे शोभा नहीं देता...ऐसा 3 मास तक करना है। इससे आपके पवित्र संस्कार इमर्ज होने लगेंगे और इस गंदे काम से वैराग्य हो जाएगा। ये पुरुषोत्तम संगमयुग ईश्वरीय प्राप्तियां करने का युग है। ताश के पत्तों में इस अनमोल समय को नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है। ये तो उन लोगों के जीवन का खेल है जिनके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता। कई लोग इसमें अपनी बहुत सारी धन-सम्पत्ति भी उड़ा देते हैं। आपको तो अपना धन ईश्वरीय कार्यों में, अपना भाग्य बनाने में लगाना है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह स्वमान - मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ।

शिवभगवानुवाच - जब तुम मास्टर सर्वशक्तिमान के स्वमान में रहते हो तो तुम्हें संकल्प-सिद्धि प्राप्त हो जाती है जिससे तुम कोई भी कार्य कर सकते हो और दूसरों से करा सकते हो।

योगाभ्यास - अ. मैं मास्टर सर्वशक्तिमान फरिश्ता हूँ...मुझसे शक्तियों की लाल किरणें चहुँ ओर फैल रही है, मेरे मस्तक पर सर्वशक्तिमान की छत्रछाया है...अन्य सभी भी फरिश्ते हैं...उनके ऊपर भी शिव बाबा की किरणें आ रही हैं।

अमृतवेला - अ. उठते ही पहला संकल्प करें कि मैं बाबा के प्यार व दुलार में पलने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ...बाबा वतन से नीचे आ गये हैं और प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरकर मुझे वरदान दे रहे हैं। मैं बाबा की दृष्टि से निहाल हो रहा हूँ...और अपने श्रेष्ठ भाग्य पर इठला रहा हूँ...।

ब. बाबा ने हमें हमारे पाँचों स्वरूपों की स्मृति दिलाई है। अत: अमृतवेला हम इन पाँचों स्वरूपों का गहराई से अभ्यास व अनुभव करेंगे।

धारणा - संतुष्टता। संतुष्टमणि बन सदा संतुष्ट रहना है और सबको संतुष्ट करना है। याद रहे, जो मेरे भाग्य में है, वह मुझसे कोई छीन नहीं सकता और जो मेरे भाग्य में नहीं है, वह मुझे कोई दे नहीं सकता। समय से पहले और भाग्य से ज़्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। इसलिए संतुष्टता को सदा के लिए अपना श्रृंगार बना लें।

चिन्तन - संतुष्टता क्यों आवश्यक है? अ-संतुष्टता का क्या कारण है? स्वयं संतुष्ट रहने और दूसरों को संतुष्ट करने के लिये क्या करें? संतुष्टता के लिये बाबा के उच्चारे पाँच महावाक्य लिखें।

द्वितीय सप्ताह स्वमान - मैं विघ्नों से मुक्त मन का मालिक हूँ।

मन को जब चाहें, जैसे चाहें, जितना समय चाहें, उतना एकाग्र कर लेना, इसको कहते हैं विघ्नों से मुक्त मन का मालिक बनना।

योगाभ्यास - इस सप्ताह योग में हम अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपों पर स्वयं को एकाग्र करेंगे।

अ. मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ...मुझसे चारो ओर दिव्य प्रकाश फैल रहा है...अपने स्व स्वरूप पर स्वयं को एकाग्र करें।

ब. परमधाम में महाज्योति परमप्रिय शिव बाबा के दिव्य स्वरूप पर स्वयं को एकाग्र करें।

स. अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप पर स्वयं को एकाग्र करें...मेरा सम्पूर्ण स्वरूप कैसा है...डबल लाइट...उपराम... तेजोमय... सर्वगुणों और शक्तियों से सम्पन्न...।

द. ऐसी धुन लगायें कि जब हम नीचे देखें तो चारो ओर चमकती हुई आत्माएँ ही दिखाई दें और जब ऊपर देखें तो सर्वशक्तिमान ज्ञान सूर्य दिखाई दें। इसके अतिरिक्त संसार में हमें और कुछ भी नहीं दिखाई दे।

अमृतवेला - अ. अमृतवेला उठते ही बाबा का बच्चे के रूप में आह्वान करें और उसे अपनी गोद में लेकर खिलायें, उससे मीठी-मीठी रुहरिहान करें। भगवान को अपना वारिस बनाने का सौभाग्य अभी ही हमें प्राप्त हुआ है...अभी उसे अपना वारिस बनायेंगे तो वह हमारा वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी उज्जवल बना देगा...वह हमसे कौड़ी लेता है और बदले में विश्व की बादशाही देता है।

धारणा - जैसे बाबा नि:स्वार्थ भाव से सर्व मनुष्यात्माओं की सेवा करते हैं, वैसे ही हमें भी अपनी नि:स्वार्थ भावना बनानी है।

चिन्तन - एकाग्रता का क्या महत्व है? एकाग्रता के लिए कौन-सी धारणाएँ आवश्यक हैं? कौन-सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं? अपनी एकाग्रता को बढ़ाने के लिए क्या-क्या अभ्यास करें? एकाग्रता के लिए कहे गए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

आधुनिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन ज़रूरी

आधुनिकता के साथ नारी को आध्यात्मिकता भी अपनाना ज़रूरी है। आज आधुनिकता को अपनाने में नारी बहुत आगे निकल गई लेकिन आध्यात्मिकता न होने के कारण उनका जीवन असंतुलित हो गया। जहाँ आध्यात्मिकता होगी वहाँ उनके गुणों की खुशबु उनके चरित्र में दिखाई देगी। अत: आज की नारी में जो सुषुप्त गुणों की खुशबु है उसे आध्यात्मिकता के माध्यम से ही बाहर लाया जा सकता है। इससे कुटुम्ब, समाज एवं देश का भी विकास होगा। इस तरह से आध्यात्मिक शक्ति के आधार से अपने जीवन में ताज़गी एवं खुशी का अनुभव करेगी और सभी संबंधों में भी खुशी व उमंग दिलाकर अच्छे प्रकंपन फैलाएगी। नारी दिव्य गुणों का कवच लेकर ही सुरक्षित रह सकती है। -डॉ. सविता संयोजिका महिला प्रभाग, शांतिवन।

गुण-दान एवं सर्व कलाओं की शक्ति महिलाओं में

आज महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएं घरों को चलाती हैं, बच्चों को चलना सिखाती है, संस्कार उनमें भरती हैं। महिलाओं के संस्कार श्रेष्ठ हों तो पूरा परिवार श्रेष्ठ हो सकता है। इसलिए गुण-दान एवं सर्व कलाओं की शक्ति महिलाओं में है। यह सर्वगुण, कलाएं वे अपने परिवार के सदस्यों में भी भर ही देती हैं क्योंकि प्रतिदिन के कार्यों में वे उनमें कह कहकर जागृति ले ही आती हैं। इसी प्रकार समाज में भी दिव्य-गुण एवं पवित्रता की शक्ति आ सकती है। तभी परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने उन्हें आगे रखा है, ज्ञान का कलश भी उन्हीं के सिर पर दिया है तथा माताओं को गुरु बनकर कार्य करने की प्रेरणा दी है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो कार्य हमारा ईश्वरीय विश्वविद्यालय कर रहा है यह भी एक बहुत बड़ा उदाहरण है क्योंकि महिलाओं को आगे लाकर, ज़िम्मेवार बनाकर संस्कार निर्माण करना बहुत बड़ी बात है। मातृ शक्ति ही ऐसा नवजीवन प्रदान कर सकती है। इसलिए शिव बाबा ने माताओं को आगे रखा है। -ब्रह्माकुमारी रानी, क्षेत्रीय निदेशिका, मुज़फ्फरपुर बिहार।

वुमेन अर्थात् विज़डम ऑफ मैन।

एक माँ ही अपने छोटे बच्चे को विज़डम देती है, नहीं तो उसके पास मैनर्स कहां से आए, अपने ऑर्गन्स का ज्ञान कहां से आया। माँ ही तो सिखाती है कि चलो कैसे, बोलो कैसे, बैठो कैसे। माँ ही अपने बच्चों की प्रथम गुरु होती है, इसलिए महिलाओं को अपनी सेल्फ रिस्पेक्ट में रहना चाहिए। एक माँ के पास ही वो ताकत है जिससे वो अपने चार बच्चों के बीच भी रिस्पेक्ट और प्यार क्रियेट कर पाती है जबकि वो शक्ति पिता में नहीं होती। महिलाओं के अंदर नैचुरल दिव्यता और आध्यात्मिकता है, सहनशक्ति है, समाने की शक्ति है, दातापन का भाव है, ये उसकी डिवाइन स्टेज है, ये उसकी आदि शक्ति है। लेकिन जब देह के भान में हम अपने को एक स्त्री समझने लगते हैं तो मॉडर्न बन जाते हैं फिर हमारा ध्यान केवल फैशन, आकर्षण, टेम्पटेशन, डिपेन्डेन्सी इन्हीं चीज़ों में चला जाता है। तो हम मॉडर्न तो नहीं बने लेकिन एक मॉडल बनके रह गए। -ब्रह्माकुमारी सुदेश, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, जर्मनी

अधिकार मांगने के बजाए स्वमान के गौरव में रहें

मेरा स्त्रियों, बहनों के प्रति यही संदेश है कि हम स्वयं ही शक्ति हैं, जब हम ही नारी शक्ति कहते हैं तो नारी कौन है और शक्ति कौन है? शरीर नारी है, शरीर पुरुष है, हम स्वयं चैतन्य शक्ति हैं। जब हम अपने चैतन्य आत्मिक स्वरूप को पहचान लेते हैं तो अपने अंदर रहे हुए जो पवित्रता, सत्यता, शांति, प्रेम इन सभी गुणों का हमें परिचय हो जाता है और जब हमें ये पता चलता है कि वर्तमान समय स्वयं परमात्मा भी इस संसार को पुन: संतुलित करने के लिए माताओं और बहनों को आगे कर रहे हैं और पिता परमात्मा स्वयं हमारा बैक बोन बना है तो अब हमें कोई चिंता, निराशा की बात नहीं है, अब हमें सिर्फ एक ही चीज़ करनी है। परमात्मा के साथ मन-बुद्धि को लगाकर पुन: स्वमान को लौटा लाना है। हमें किसी से भी अधिकार मांगने की ज़रूरत नहीं है, बस हमें अपने स्वमान के गौरव में रहना है।

-ब्र.कु. गीता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू

सोटस हाउस-अहमदाबाद। 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर 'गीता का भगवान शिव' एवं 'अमरनाथ दर्शन' झांकियों का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.जयन्ती,लंदन, गुरुप्रसाद महापात्रा,म्यूनीसिपल कमिशनर अहमदाबाद, डॉ. निर्मला वाधवानी,ए-धायक नरोडा तथा अन्य।

सिकंदरा खोदला-आगरा। शिवरात्रि के पावन अवसर पर रैली के दौरान विधायक जगन प्रसाद गर्ग, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु गीता, ब्र.कु.मधु, ब्र.कु.बलवीर, एडवोकेट ब्र.कु.ब्रजमोहन तथा अन्य।

कमला नगर-आगरा। हिन्दुस्तान टाइम्स के संपादक पुष्पेन्द्र शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला।

बनारस। ज्ञान चर्चा के पश्चात् एम.पी.गोरखनाथ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज।

बोंगईगांव-असम। शिवरात्रि पर परमात्मा का संदेश पहुँचाने हेतु झांकी को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए एस. दास,एडीशनल जज बोंगईगांव। साथ हैं ब्र.कु.लोनी, ब्र.कु.गंगा, ब्र.कु.भारती तथा अन्य।

जानकीपुरम विस्तार-लखनऊ। शिव जयन्ती आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर शहर के मेयर दिनेश शर्मा का पुष्पों द्वारा स्वागत करते हुए ब्र.कु.सुमन।

विश्व की सबसे बड़ी पतंग द्वारा परमात्म अवतरण का शुभसंदेश

बेलगाम। 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के अवसर पर इस पावन पर्व के लक्ष्य और उद्देश्य के बारे में समझाते हुए ब्र.कु.वसंता ने कहा कि सभी धर्मों के लोग जिस परमात्मा की बंदगी करते आए हैं उसी परमपिता शिव के समस्त भारतवर्ष में द्वादश ज्योतिर्लिंग के रूप में यादगार बने हुए हैं। जब धरती पर सभी आत्माएं दु:खी, अशांत व पतित हो जाती हैं तब परमात्मा इस धरा पर पुन: ब्रह्मा तन द्वारा पतित सृष्टि को पावन कर सुंदर दैवी स्वराज्य स्थापित करने हेतु अवतरित होते हैं। वही समय अभी चल रहा है जब वे अधर्म व असत्य का नाश और एक सत्य धर्म की पुन: स्थापना कर रहे हैं।

बेलगाम। कैंडल लाइटिंग करते हुए शा.ब्र. शिवाचार्य चंद्रशेखर हुक्केरी स्वामी जी, श्री नारायण शरण जी,गोकाक, डॉ. राजशेखर, सुहास खामकर, ब्र.कु.गंगाधर, ब्र.कु.अंबिका, ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु.वसंता तथा अन्य।

महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़, बेलगाम की ओर से विश्व की सबसे बड़ी पतंग द्वारा परमात्म अवतरण का शुभ संदेश दिया गया। 203 फीट ऊंची, 73 फीट चौड़ी तथा 150 किलो ग्राम वजन की सबसे बड़ी पतंग का विश्व कीर्तिमान ब्र.कु. अंबिका ने सफलता पूर्वक स्थापित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलन द्वारा हुआ जिसमें शा.ब्र. शिवाचार्य स्वामीजी, मि. ओलम्पिया में सिलवर मैडल जीतने वाले पहले भारतीय, मि. वर्ल्ड में ब्रॉन्ज मैडल विजेता, मि. एशिया में गोल्ड मैडल विजेता तथा लगातार 9 बार मि. इंडिया का खिताब जीतने वाले विश्व विख्यात बॉडी बिल्डर सुहास खामकर, ओम शान्ति मीडिया के मुख्य संपादक ब्र.कु. गंगाधर, आयोजक ब्र.कु. अंबिका, इस विश्व कीर्तिमान के संयोजक ब्र.कु. दीपक उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दो मिनट के योग द्वारा किया गया। ब्र.कु. विजयलक्ष्मी ने सभी अतिथियों का शब्दों से स्वागत किया। ब्र.कु. वसंता ने महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य बताया। वर्ल्ड अमेज़िंग रिकॉर्ड्स के अध्यक्ष पनव सोलंकी ने पतंग का निरीक्षण करके इस रिकॉर्ड को वर्ल्ड अमेज़िंग रिकॉर्ड्स में शामिल किये जाने की घोषणा की, तथा रिकॉर्ड के लिए प्रमाणपत्र एवं ट्रॉफी,

आयोजक ब्र.कु. अंबिका तथा संयोजक ब्र.कु. दीपक को प्रदान किया। वर्ल्ड अमेज़िंग रिकॉर्ड्स के बाद इस विश्व कीर्तिमान को लिमका बुक और रिकॉर्ड्स, रिकॉर्ड होल्डर रिपब्लिक, एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, एवरेस्ट बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, यूनीक वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जल्द ही शामिल किया जाएगा।

कार्यक्रम में उपस्थित शा.ब्र. शिवाचार्य चंद्रशेखर हुक्केरी स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में सबको सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी धर्मों में विचारधाराएं अलग होने के कारण मतभेद हैं परन्तु प्रेम से बड़ा मंत्र कोई नहीं है। जब अहंकार को हटाएंगे तब ही सारी दुनिया एक हो पाएगी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आने के पश्चात् भाईचारे की भावना एवं अपनापन जागृत होता है। पूज्य श्री नारायण शरण जी,गोकाक ने कहा कि सारे विश्व में सबसे ज़्यादा त्याग और से-वाभाव ब्रह्माकुमारीज़ में ही दिखाई देता है। परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु है और उसका संदेश जन-जन तक पहुँचाने वाली संस्था यह विश्वविद्यालय ही है। 9 बार मिस्टर इंडिया रह चुके सुहास खामकर और मलेशियन यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर डॉ. राजशेखर ने शुभकामनाएं व्यक्त की।

इसके पूर्व आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत ब्र.कु.विजु ने किया तथा ब्र.कु.विद्या ने संस्था का परिचय देते हुए सभी मुख्य अतिथियों को तिलक एवं बैज लगाए। कुमारी अश्विनी ने स्वागत नृत्य द्वारा सभी का मन मोह लिया। ब्र.कु. गंगाधर, माउण्ट आबू ने बताया कि शिव अवतरण महोत्सव में जैसे पतंग को ऊपर चढ़ाने के लिए रस्सी को खींचना भी पड़ता है और लूज भी छोड़ना होता है तभी वो आकाश में ऊँचे से ऊँचा उड़ती है। ऐसे ही हमारे जीवन में भी आने वाली परिस्थितियों और कठिनाइयों को धैर्यपूर्वक पार करना चाहिए न कि हलचल व तनाव में आकर। साथ ही उन्होंने अवतरण और अवतार, इन दो चीज़ों का भेद समझाते हुए कहा कि अवतरण परकाया में प्रवेश होकर होता है जबकि अवतारी पुरुष का जन्म माँ की कोख से होता है। इसलिए परमात्मा का अवतरण होता है, अवतार नहीं। वो जन्म नहीं लेता, परकाया प्रवेश करता है।

इसके पहले कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन करके शुभारंभ किया गया तथा विश्व की सबसे बड़ी पतंग को उड़ाया गया।

विश्व-परिवर्तन के लिए आत्म-परिवर्तन ज़रूरी

लुधियाना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की लुधियाना केन्द्र प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी की उपस्थिति में गांव झांडे स्थित विश्व शान्ति सदन में ब्र.कु. शिवानी (अंवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़ कार्यक्रम की मशहूर प्रवक्ता) की प्रेरणादायक वार्ताओं की श्रृंखला का शुभारंभ हुआ।

दो अलग-अलग स्तरों में जनसमुदाय को संबोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी ने 'नारी सशक्तिकरण' व 'अपेक्षाओं से स्वीकृति तक' (एक्सपेक्टेशन टू एक्सैप्टैंस) विषयों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि नारी लंबे समय से घरेलु स्त्री व माँ के रूप में भूमिका निभाती रही है परन्तु अब मात्र घर की ज़िम्मेदारियों से ऊपर उठकर वह अपने अस्तित्व की पहचान बनाने व आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए घर से बाहर कदम रखने लगी है। हमारा समाज भी इसके इस बदलते रूप के नतीजों को अपनाने की कोशिश कर रहा है। तेज़ी से बदलते समाज में नारी को अपनी स्थिति को पुन: परिभाषित करने के लिए रूढ़ीवादिता से संघर्ष करना पड़ रहा है। उन्होंने महिलाओं से प्रश्न किया कि क्या वह अधीनता व अक्रियशीलता को बंद नहीं कर सकतीं? और सदियों से चले आ रहे दमन से ऊपर नहीं उठ सकतीं? उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण इन सब सवालों का एकमात्र जवाब है। यह संतुलन बनाए रखने का एक विशिष्ट तरीका है। सशक्तिकरण आत्मिक समझ से प्रारंभ होता है। आत्मा की आंतरिक शक्तियों में स्त्री एवं पुरुष दोनों की शक्तियाँ समाहित होती हैं। आध्यात्मिक सशक्तिकरण व्यक्ति को इन्हीं आंतरिक शक्तियों की महसूसता कराता है तथा स्त्री एवं पुरुष तत्वों का एक सौहार्दपूर्ण संतुलन स्थापित करता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि ब्रह्माकुमारीज़ अपनी महिला विंग द्वारा दुनियाभर में स्त्रियों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण की ओर प्रतिबद्ध है। यह विश्वविद्यालय सभी लोगों में भी आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जागरुकता लाने में मदद करता है। एक अन्य स्तर में 'अपेक्षाओं से स्वीकृति तक' (एक्सपेक्टेशन टू एक्सैप्टैंस) पर वार्ता करते हुए उन्होंने बताया कि जब हम दूसरों से अपेक्षाओं की जगह उनके प्रति स्वीकृति की ओर बढ़ते हैं तो हमें अद्भुत अनुभूति होती है। हम अपने आप को अधिक हल्का, खुश एवं शान्त अनुभव करते हैं। अपेक्षा-रहित होने से हम दूसरों के गुणों की सराहना करना सीखते हैं और जीवन के प्रति अधिक सहज हो जाते हैं। उन्होंने राजयोग के अभ्यास द्वारा जनसमुदाय को शान्ति एवं आनंद का अनुभव भी कराया।

लुधियाना। ब्र.कु शिवानी जनसमुदाय को 'नारी सशक्तिकरण' व 'अपेक्षाओं से स्वीकृति तक' विषयों पर सम्बोधित करते हुए।

ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में जानकारी देते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी ने कहा कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जो आध्यात्मिक एवं मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रही है। इसके विश्व भर में 9000 सेवाकेन्द्र हैं तथा 140 देशों में आध्यात्मिक सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र के साथ एक गैर राजकीय संस्था के रूप में संलग्न है तथा एकोनॉमिक एण्ड सोशियल काउंसिल एवं यूनीसेफ के साथ सलाहकार के रूप में कार्यरत है।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 170 रुपये, तीन वर्ष 510 रुपये, आजीवन 4000 रुपये । विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।